MAA OMWATI DEGREE COLLEGE

HASSANPUR

NOTES

CLASS:- B.A. 1st Sem.

SUBJECT: - History (Ancient History Of India) (MC)

Pg. No.______ Date __/__/__

प्रश्न :- इतिहास का अर्थ एवं परिभाषा :-

उत्तर :- इतिहास क्या है इस विषय पर इतिहासकारों में मतभेद है। इतिहासकार समसामयिक समाज की रुचि एवं आवश्यकता को ध्यान में रखकर अतीत की घटनाओं का उल्लेख करता है जो समयानुसार परिवर्तित होती रहती है। इसके साथ ही इतिहास के अर्थ परिभाषा तथा अवधारणा में भी परिवर्तन रहता है। वैसे भी इतिहास तीन शब्दों 'इति - ह - आस के मेल से बना है। जिसका अर्थ है। ऐसा वास्तव में हुआ। व्यवहारिक रूप में अतीत में मानव के कार्यों एवं उपलब्धियों के उल्लेख को इतिहास कहा जाता है। इतिहास लेखन की परम्परा का उद्‌गम प्राचीन यूनान में देखने को मिलता है। हिस्तोर वह विद्वान होता है जो वाद-विवाद का निपटारा करता था। इतिहास को अंग्रेजी में हिस्ट्री कहा जाता है। सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग यूनान के प्रसिद्ध इतिहासकार अर्थात् इतिहास के जनक हेरोडोटस ने अपनी पुस्तक हिस्टोरिका में किया। इतिहास शब्द से उसका अभिप्राय खोज तथा अनुसंधान करना था।

इतिहास की परिभाषा :-

इतिहास की सही एवं उचित परिभाषा नहीं दी जा सकती है। फिर भी कुछ इतिहासकारों ने अपने - अपने ढंग से इतिहास की परिभाषा दी है। इनमे से मुख्य परिभाषाएँ

(I) ई० एच० कार० के अनुसार :- इतिहास अतीत और वर्तमान के बीच एक अनंत संवाद है।

(II) हेनरी पिरेन के अनुसार :- इतिहास समाज में रहने वाले मनुष्यों के कार्यों एवं उपलब्धियों की कहानी है।

जी० एम० ट्रेवेलियन के अनुसार :- इतिहास अपने अपरिष्कृत नीचे अंश में एक कहानी है।

रैनियर के अनुसार :- इतिहास सभ्य समाज में रहने वाले मनुष्यों के कार्यों एवं उपलब्धियों का उल्लेख होता है।

कॉलिंगवुड ने इतिहास की परिभाषा देते हुए लिखा है :- समपूर्ण इतिहास विचारधारा का इतिहास होता है।

इंगलिश विद्वान क्रोचे के अनुसार :- सम्पूर्ण इतिहास समसमयिक होता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि इतिहास अतीत की घटनाओं तथा मनुष्य की उपलब्धियाँ का उल्लेख है हालांकि इतिहास में सभी व्यक्तियों के कार्यों का उल्लेख नही किया जाता है। बल्कि इसमे उन्ही व्यक्तियों की उपलब्धियाँ का वर्णन किया जाता है। जिन्होंने तलवार के बल पर बड़े-बड़े सम्राज्य स्थापित किए या फिर समाज का मार्गदर्शन किया।

इतिहास की अवधारणा :-

विद्वानों ने प्राचीन काल से ही इतिहास लेखन की आवश्यकता महसूस की है। समाज निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है जिससे उसके स्वरूप में परिवर्तन होता है। विकास की इस प्रक्रिया के साथ-साथ सामाजिक आवश्यकताओं में भी परिवर्तन होता है। इतिहास इन्ही सामाजिक आवश्यकताओं के परिवेश में इतिहास-लेखन करता है। समयानुसार तथा समाज की आवश्यकतानुसार इतिहास की आवधारणा में भी परिवर्तन आता है। सभी देशों अथवा सभ्यताओं की अपनी अलग-अलग अवधारणा रही है।

अध्ययन की सुविधा के लिए इतिहास की अवधारणा को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) चक्रीय अवधारणा :- इस अवधारणा के अनुसार मानव इतिहास को एक निरंतर चलने वाला चक्र अथवा युग चक्र माना जाता है। इसमें इतिहास की पुनरावृत्ति होती है। कहने का अर्थ यह है कि मानव इतिहास जहाँ से प्रारम्भ होता है। अंत: में वही पहुँच जाता है। प्राचीन युग के भारतीय इतिहासकारों ने मानव इतिहास चक्र को चार युगों में विभाजित किया - सतयुग, त्रेतायुग द्वापरयुग तथा कलयुग। यही चक्र निरंतर चलता रहता है कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जिस प्रकार पहिया घूमता है उसी प्रकार एक युग दूसरे युग में प्रवेश करता है और अंत: वही पहुँच जाता है। जहाँ से वह प्रारम्भ हुआ था। प्राचीन साहित्य को पढ़ने से भी पता चलता है। कि प्रारम्भ में सतयुग प्रचलित था। इसी प्रकार रोमन इतिहास पोलिबियस में भी युग चक्रीय अवधारणा देखने को मिलती है। परन्तु कॉलिंगवुड ने युग चक्रीय अवधारणा की कटु-आलोचना की थी।

(2) ईश्वरीय अवधारणा :- इतिहास लेखन पर धर्म का बहुत प्रभाव पड़ता है। धर्म ने प्रत्येक देश के इतिहास लेखन को प्रभावित किया है। इसमें इतिहास को ईश्वर की रचना माना जाता है। इस अवधारणा का प्रतिपादन संत आगस्टीन ने किया। उसने मनुष्य के इतिहास में सात अवस्थाओं का प्रतिपादन किया है। उसके पश्चात् सभी धर्मशास्त्री किसी न किसी रूप से आगस्टीन की अवधारणा से प्रभावित रहे। स्पेनवासी पादरी पालस आरोसियन पर संत आगस्टीन का बहुत प्रभाव था। उसने अपनी पुस्तक हिस्टोरिया को सत आगस्टीन को समर्पित किया।

उसने अपनी पुस्तक को सात खण्डों में विभाजित किया है जो मानव - इतिहास के सात युगों को दर्शाते हैं प्राचीन भारतीय इतिहास - लेखन में यही अवधारणा देखने को मिलती है।

(3.) प्राचीन भारतीय अवधारणा :- पश्चिमी इतिहासकारों का मत है कि प्राचीनकाल भारतीयों में इतिहास लेखन के प्रति रुचि का अभाव था। उन्हें ऐतिहासिक घटनाओं के प्रस्तुतीकरण तथा तिथिक्रम के विषय में कोई जानकारी नहीं थी। भारतीय प्राचीनकाल में इतिहास लेखन की बजाय धार्मिक ग्रन्थों की रचना पर अधिक बल देते थे। इसके अतिरिक्त वे अपने लेखन में कल्पित गाथाओं और मिथकों को अधिक महत्व देते थे। इसका कारण यह था कि भारतीय समाज जातीय आधार पर चार वर्णों में विभाजित था। इसमें प्रत्येक जाति का कर्म तथा व्यवसाय निश्चित था। उस समय के इतिहास में भी ये सभी बातें देखी जा सकती हैं। वैसे भी इतिहास - लेखन समाज की आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता है। उस समय अतीत की घटनाओं का उल्लेख समाज की आवश्यकताओं एवं परिवर्तनों को ध्यान में रखकर किया गया।

(4) आधुनिक काल की अवधारणाएँ :- यूरोप में पुनर्जागरण काल से आधुनिक लेखन की अवधारणाओं का आरम्भ माना जाता है। इस युग में इतिहास के दृष्टिकोण में बहुत व्यापक परिवर्तन आया जिसमें ईश्वरपरक दृष्टिकोण के स्थान पर मानवपरक विचारों को प्रधानता दी गई। मध्यकालीन इतिहासकारों के विपरीत आधुनिक इतिहासकार सत्य और संघर्ष पर अधिक बल दिया है।

उन्होंने इतिहास में ईश्वरीय इच्छा के कारण को अस्वीकार कर दिया। मानवीय इच्छा को प्रबलता से स्वीकार किया।

(i) प्रगतिवादी एवं क्रान्तिवादी अवधारणा :-

इतिहास की प्रगतिशील अवधारणा में इस बात पर बल दिया गया है कि इतिहास एक सीधी रेखा में चलता है। इसमें मनुष्य निम्नतर स्थिति उच्चतर स्थिति में आता है। मनुष्य का विकास एक क्रमिक एवं निरंतर प्रक्रिया है। जो बिना रुके आगे बढ़ती रहती है। हीगल तथा कार्ल मार्क्स की ऐतिहासिक व्याख्या में भी यही बात देखने को मिलती है इसके अतिरिक्त 18 वीं शताब्दी वैज्ञानिक आधार पर इतिहास लेखन की परंपरा आरम्भ हुई। मॉन्टेस्क्यू ने अलोचनात्मक आधार पर राजनीतिक संस्थाओं उदय तथा उनके विकास की व्याख्या की गति तथा स्वरूप को मानव जीवन की गति तथा स्वरूप को निर्धारित करते हैं। वाल्तेयर ने इतिहास लेखन में वैज्ञानिक एवं अलोचनात्मक पद्धति को अपनाया जबकि रूसो ने इतिहास लेखन में मनुष्य की स्वतंत्रता पर बल दिया

(ii) भौतिकवादी अवधारणा :-

हीगल ने 19 वीं शताब्दी में इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने इतिहास लेखन में घटनाओं के वितरण की बजाय उनके पीछे कार्यरत कारणों पर अधिक बल दिया। उनका मानना था कि इतिहासकारों को किसी घटना का वर्णन करने की अपेक्षा इस बात पर ज्यादा बल देना चाहिए कि उक्त घटना के घटित होने के पीछे क्या कारण थे।

उनका मानना था कि प्रत्येक घटना के पीछे तीन बातें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है- वाद प्रतिवाद तथा संवाद। हीगल के अनुसार समाज मे परिवर्तन बाहरी कारणों से नहीं बल्कि आंतरिक कारणों से होते हैं।

(iii) **मार्क्सवादी अवधारणा :-** कार्लमार्क्स ने इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा की। उन्होने अतीत को समझने के लिए वैज्ञानिक उपकरण प्रस्तुत किए। उनका मानना था कि विचार वातावरण को प्रभावित नहीं करते वे तो स्वंय ही वातावरण में उत्पन्न होते है। उन्होंने कहा कि इतिहास केवल जननायकों के कार्यों एंव उपलब्धियां का उल्लेख नहीं है। बल्कि इसके निर्माण में जनसाधरण लोगों की भी भूमिका होती है।

इतिहास के स्त्रोत :- हमारे प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने के लिए हमे पास स्त्रोतो का अभाव है यही कारण है कि हमे इतिहास को जानने के लिए विभिन्न अलिखित एंव लिखित स्त्रोतों का सहारा लेना पड़ता है। वैसे भी प्राचीन काल मे भारतीयों की इतिहास लेखन में अधिक रुचि नहीं थी। वे धर्म से संबंधित पुस्तके लिखने पर ही अधिक बल देते थे।

(1) पुरातात्विक स्त्रोत।
(2) धार्मिक स्त्रोत।
(3) ऐतहासिक एंव अर्ध- ऐतिहासिक स्त्रोत।
(4) विदेशी यात्रियों के वृतान्त।
(5) लोकथाय।

(1) **प्राचीन भारतीयो इतिहास के स्त्रोतो के अपर्याप्त एंव अनिश्चित होने के कारण :-**
जैसा कि पीछे उल्लेख किया जा चुका है कि प्राचीन भारतीय इतिहास के लेखन मे स्त्रोतो का बहुत महत्व होता है। इतिहास लेखन का कार्य भारतीयो के साथ- साथ विदेशी इतिहासकारों द्वारा भी किया गया है। परिणामस्वरूप इतिहास लेखन कि विभिन्न पद्धतियों जैसे समाज्यवादी राष्ट्रवादी उपनिवेशवादी मार्क्सवादी इत्यादि का प्रचलन हुआ।

(2) **भारतीयों मे ऐतिहासिक रुचि का अभाव :-**

प्राचीनकाल में भारतीयों मे इतिहास के प्रति रुचि का अभाव था। वे राजनैतिक घटनाओं का क्रमबद्ध उल्लेख करने अथवा राजाओं के जीवन- चरित्र को लिखने की बजाय धर्म एंव दर्शन से संबंधित ग्रंथ लिखने में ज्यादा रुचि लेती है।

(3) **क्रमानुसार इतिहास का अभाव :-**

भारतीय इतिहास के स्त्रोतो के अपर्याप्त होने का एक और मुख्य कारण क्रमानुसार इतिहास का अभाव है। प्राचीन काल भारतीय लोग इतिहास लिखते है। उनकी तिथियों एक - दुसरे से मेल नहीं खाती थी।

(4) **धर्म एंव दर्शन को अधिक महत्व :-**

प्राचीन काल मे भारतीयो ने धर्म और दर्शन पर अधिक बल दिया। वे इस जन्म को सुधारने की बजाय परलोक को सुधारने पर अधिक बल देते थे।

(5) भारत की सामाजिक संरचना :-

भारतीय स्त्रोतों के अपर्याप्त एंव अनिश्चित होने का सबसे महत्वपूर्ण कारण भारत की सामाजिक संरचना थी। प्राचीन भारत की सामाजिक संरचना जाति प्रथा आधारित थी।

(6) भारत में राजनीतिक एकता का अभाव :- प्राचीन काल मे भारत राजनीतिक एकता का पूर्णतया अभाव था। मौर्य साम्राज्य की स्थापना से पूर्व समस्त भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित किया था। छठी शताब्दी ई०पू० उत्तरी भारत में ही सोलह महाजनपद स्थापित थे।

(7) प्राचीन ग्रंथों का नष्ट होना :-

प्राचीन भारत में ऐतिहासिक स्त्रोतों के अपर्याप्त होने का मुख्य कारण प्राचीन ग्रंथों का नष्ट होना है। प्राचीन काल में सभी राजा अपने दरबारों में इतिहासकारों अथवा विद्वानों को रखते थे।

(8) अन्य कारण :-

(1) प्राचीन काल में भारतीयों ने देवी-देवताओं की स्तुति में ज्यादा ग्रन्थ लिखे।

(2) विभिन्न संवतों के प्रचलन से ऐतहासिक घटनाओं की सही-सही जानकारी नहीं हो पाती थी जिससे प्रचलित भारत का इतिहास नहीं लिखा जा सका।

(3) प्राचीन काल के शासक केवल अपने वंशों की प्रशंसा को ही महत्व देते थे।

(1) पुरातात्विक स्त्रोत :-

पुरातात्विक स्त्रोत प्राचीन भारतीय इतिहास के लेखन में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। वैसे भी लिखित स्त्रोतों के अभाव में इनका महत्व काफी अधिक हो जाता है। इन स्त्रोतो में चट्टानों अभिलेख प्राचीन भवन मुद्राएँ इत्यादि सम्मलित है।

(i) अभिलेख :- प्राचीन काल में अभिलेख पत्थर की शिलाओं स्तम्भों ताम्र पत्रों भवनों की दीवारों मुद्राओं मुहरों मूर्तियों इत्यदि पर लिखे जाते है। अभिलेखों में मौर्य सम्राट अशोक के स्तम्भ लेख एंव शिलालेख सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

(2) स्मारक एंव भवन :-

प्राचीन काल के स्मारकों एंव भवनों से भी प्राचीन भारतीय इतिहास की बहुमूल्य जानकारी मिलती है। स्मारकों और भवनों के अवशेष भारत में बिखरे पड़े है जिनमें कुछ भूमि की खुदाई से मिले।

(3) मूर्तियाँ :- भवनों एंव स्मारकों की भांति मूर्तिया भी भारतीय इतिहास के निर्माण में अहम भूमिका निभाती है। हड़प्पा संस्कृति से संबंधित स्थलों की खुदाई से प्राप्त शिव मातृ देवी की मूर्तियाँ से तत्कालीन लोगों की धार्मिक स्थिति और मूर्तिकला के बारे में जानकारी मिलती है।

(4) सिक्के :-

प्राचीन भारतीय इतिहास के पुरातात्विक साधनों में सिक्कों का भी बहुत महत्व है। प्राचीन सिक्कों पर अनेक प्रकार के चिह्न उत्कीर्ण है। और इन पर किसी भी तरह के लेख नहीं है। ये आहत सिक्के अर्थात पंचमार्क सिक्के कहलाते है।

(5) अवशेष :-
अनेक स्थानों से प्राचीन भारत से सम्बन्धित प्राचीन अवशेष जैसे मिट्टी के बर्तन पत्थर के हथियार औजार इत्यादि मिले हैं जिनसे हमें तत्कालीन लोगों के रहन-सहन के विषय में जानकारी मिलती है।

(2) धार्मिक स्त्रोत :-
इतिहास लेखन में धार्मिक स्त्रोतों का भी बहुत ऐतिहासिक महत्व है। ये धर्म से संबंधित इतिहास लेखन की परंपरा है।

(1) वैदिक साहित्य :-

वैदिक साहित्य में वेद ब्राह्मण ग्रन्थ आरण्यक उपनिषद इत्यादि सम्मिलित है। धार्मिक इनकी रचना किस काल में हुई।

(क) वेद (1) ऋग्वेद :-

सभी चारों वेदों में ऋग्वेद सबसे प्राचीन है। ऋक् का अर्थ छन्दों एवं चरणों से युक्त मन्त्र होता है। दूसरे अर्थों में ऐसा ज्ञान जो ऋचाओं में पद्य हो ऋग्वेद कहलाता है।

(11) सामवेद :-

साम का शाब्दिक अर्थ गान होता है। अतः सामवेद में ऐसे मंत्र संकलित है जो देवताओं की स्तुति में गाए जाते हैं।

(3) यजुर्वेद :-

यजु शब्द का अर्थ यज्ञ होता है। अतः यह वेद यज्ञ विधियों से संबंधित है। इसमें कुल 40 अध्याय और 2086 श्लोक है।

(4) अथर्ववेद :-
अथर्ववेद की रचना अथर्वा ऋषि ने की थी। इसलिए इसे अथर्ववेद के नाम से जाना जाता है।

बौद्ध साहित्य :-

बौद्ध साहित्य में सुत्तपटिक, अभिधम्मपटिक, विनयपटिक जातक कथाएँ आदि शामिल होते है। बौद्ध साहित्य में प्रसिद्ध ग्रंथ सिरवे जाते है। इन ग्रन्थों में महात्मा बुद्ध के मूल सिद्धांतों और उपदेशों का उपदेशों का उल्लेख मिलता है।

जैन साहित्य :-

जैन धर्म के साहित्य में 12 अंग 12 उपांग 10 प्रकीर्ण 6 छन्द सूत्र और 12 मूल सुत्र महत्वपूर्ण है। इनमें जैन धर्म महावीर & स्वामी के जीवन और उनकी शिक्षाओं के साथ-साथ सामाजिक स्थिति का वर्णन किया है।

(3) ऐतिहासिक एवं अर्द्ध-ऐतिहासिक स्त्रोत :-

धर्म साहित्यों के अतिरिक्त भारतीयों के अनेकानेक ऐसे ग्रन्थों की भी रचना की जिनमें भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

(1) अर्थशास्त्र :-

कौटिल्य ने चौथी शताब्दी ई०पू० में अर्थशास्त्र की रचना की अर्थशास्त्र 15 अध्यायों में विभाजित है। कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य का शिक्षक एवं प्रधानमंत्री था। उसकी प्रसिद्ध रचना अर्थशास्त्र के नाम से ऐसा लगता है कि यह अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित पुस्तक है।

Pg. No.
Date / /

नवपाषाण काल की विशेषताएँ :-

(1) मनुष्य एक खाद्य उत्पादक के रूप में :-

नवपाषाणकाल मनुष्य के जीवन का बहुत महत्वपूर्ण काल था। इस काल में उसने अनेक खोजें की जिससे अब उसके जीवन में सरलता आने लगी। इस काल में मनुष्य की प्रमुख उपलब्धियाँ खाद्य उत्पादन का आरम्भ पशुओं के उपयोग की जानकारी और ग्राम्य जीवन का विकास थी। सबसे पहले मनुष्य ने कृषि करना सीखा। प्राप्त अवशेषों के माध्यम से कहा जा सकता है। उस समय ग्रामीण बस्तियों का आकार बहुत बड़ा होने के साथ-साथ जनसंख्या में वृद्धि हो गई होगी। जिससे खाद्यान्नों की माँग बढ़ गई हो गई। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि कृषि की कोई भी फसल किसी वन्य फसल की वंशज होती है

(2) कृषि का आरम्भ :-

नवपाषण काल में मनुष्य की कृषि करनी आरम्भ की। भारत में कृषि का आरम्भ 7000 - 5000 ई० पूर्व के बीच माना जाता है। मेहरगढ़ से कृषि के सबसे प्राचीन साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

(3) पशु-पालन :-

नवपाषाण काल में कृषि के साथ-साथ मनुष्य के लिए पशुपालन की भी आवश्यकता होती है।

Pg. No.
Date / /

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि मनुष्य ने सबसे पहले कुत्ते की उपयोगिता को समझते हुए उसे पालना आरम्भ है। कुत्ते की सहायता से वह शिकार करता था। कुत्ता मनुष्य की रात समय हिंसक जानवरों से रक्षा करता है। इसके पश्चात मनुष्य ने अपने जीवन के महत्व को बताया है।

(4) निवास स्थान :-

नवपाषाण काल में कृषि के आरम्भ हो जाने से मनुष्य के इधर-उधर भटकने के दिन समाप्त हो गये। अब उसने स्थायी रूप से एक जगह रहना आरम्भ हो जाने से मनुष्य के इधर-उधर घास-फूसकर की झोपड़ियाँ बनाकर रहने लगा। कुछ ऐसे अवशेष प्राप्त हुए हैं जिनसे अनुमान लगाया जाता है। स्थान पर गड्ढे खोदकर बनाए गए घर प्राप्त हुए हैं। जिन्हें गर्तावास कहा जाता है।

(5) ग्राम जीवन का उदय :-

नवपाषाण काल में मनुष्य ने बस्तियाँ बनाकर गाँवों में निवास करना आरम्भ कर दिया। कृषि तथा पशुपालन से मनुष्य की भोजन के लिए शिकार पर निर्भरता कम हो गई। अब उसने स्थायी रूप से निवास करना आरम्भ कर दिया। उसकी भोजन की आवश्यकता की पूर्ति कृषि तथा पशुपालन पर करते हैं। अतः अपने खेतों तथा मिट्टी की झोपड़ियाँ बना ली।

(6) खान-पान :-

कृषि के आरम्भ हो जाने से नवपाषाणकालीन में मनुष्य

ने अपने खेतों में अनाज व फल उगाकर खाना आरम्भ कर दिया। पूर्व पाषाण काल में वह कच्चे माँस तथा जंगली फलों पर निर्भर रहता था परन्तु अब उसने अनाज तथा माँस को आग में पकाकर खाना आरम्भ कर दिया।

(7) पहिये का अविष्कार :-

नवपाषाण में मनुष्य का सबसे क्रांतिकारी कदम पहिये का अविष्कार था। पहिये के अविष्कार के पश्चात् वह चाक पर मिट्टी के बढ़िया प्रकार के बर्तन बनाने लगा। इन बर्तनों को वह आग में पकाकर बाद में उन पर रंगों द्वारा बढ़िया प्रकार की नक्कासी करने लगा। ऐसा माना जाता है कि पहले मनुष्य बर्तनों को पकाना नहीं जानता था। कटोरी आग में गिर गई।

(8) उद्योगों का विकास :-

पहिये के अविष्कार के पश्चात् मनुष्य ने विभिन्न प्रकार के व्यवसायों को अपनाना आरम्भ कर दिया। चाक की सहायता से वह मिट्टी से विभिन्न प्रकार के सुंदर-सुंदर बर्तनों जैसे बड़े मटके कटोरियाँ तश्तरियाँ गिलास आदि बनाता था। अब मनुष्य लकड़ी की बैलगाड़ी भी भारी मात्रा में बनता था।

(9) हथियों और औजार :-

नवपाषाण काल के हमें अच्छे प्रकार के औजार तथा हथियार प्राप्त हुए थे। इस युग में पत्थर के बहुत अच्छे उपकरण बनाए जाते थे। कृषि के कार्यों में भी लकड़ी और पत्थर के औजारों का प्रयोग किया जाता है। मनुष्य हल परांती कुल्हाड़ी हंसिया चाकू तथा छुरे आदि बनाता था।

इनके अलावा वह हड्डी कुदाल छेनी तथा चक्की भी बड़ी मात्रा में था। औजार पत्थर को घिसा-घिसाकर बनाए जाते थे।

(10) वाणिज्य तथा व्यापार :-

नवपाषाण काल में मनुष्य की चेतना में विकास के साथ-साथ उसकी इच्छाएँ भी बढ़ने लगी। उसने अपनी आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन करना आरम्भ कर दिया। संपत्ति तथा परिवार के प्रति उसका लगाव अर्थात् प्रेम भी बढ़ने लगा। मनुष्यों के एक स्थान पर निश्चित रूप से निवास करने के कारण जनसंख्या में वृद्धि होने लगी।

(11) राजनैतिक संगठन :-

नवपाषाणकाल में मनुष्य के स्थायी निवास से परिवार गोत्र तथा समाज का उत्थान हुआ। कालान्तर में मनुष्यों ने भूमि पर भी अपना स्वामित्व जमाकर के स्थायी निवास से कबीले बसाये स्थापित कर लिये। प्रत्येक कबीले का अपना मुखिया होता है। सबसे बड़ी उम्र वाला व्यक्ति कबीले का मुखिया कहलाता था।

(12) धार्मिक विश्वास :-

नवपाषाण काल में मनुष्य के स्थायी धार्मिक विचारों में भी परिवर्तन आता है। मूर्तियां पूजा करने के काम आती है। कुछ स्थानों पर मानव अस्थिपिंजर के पास हथियार तथा पत्थर की मूर्तियां आदि प्राप्त हुए है। इनसे अनुमान लगाया जा सकता है।

सुनील माथुर ने लिखा :- मनुष्य मौलिक पदार्थों में एक प्रकार का जीवन शक्ति का अनुभव करने लगा।

मनुष्य भौतिक पदार्थों में एक प्रकार की जटिल वासना का अनुभव करना लगा। इस युग के धर्म को भूतवाद की संज्ञा दी जाती है।

(13) कला :-

नवपाषाण काल में कला का विकास भी अपनी चरम सीमा पर था। आग व पहियें की खोज हो जाने से मनुष्य चाक की सहायता से टैराकोटा के बर्तन प्रकार के सुंदर-सुंदर बर्तन बनाता था। और इन बर्तनों को आग में पकाकर उन पर पशु-पक्षियों फूल-पत्तों के चित्र बनाकर नक्कासी करता था। उस मनुष्यों की मूर्तियाँ भी काफी मात्रा में बनाई गई थी।

प्रश्न 8- पर्यटन की अवधारणा अर्थ एवं परिभाषा :-

प्राचीन काल से ही मानव जीवन में पर्यटन विभिन्न रूपों में प्रचलित रहा है। पाषाणकालीन मानव अपनी उदर पूर्ति हेतु जगह-जगह घूमता रहता है। यद्यपि मानव के किन्तु पर्यटन का प्रारम्भिक स्वरूप यही था। मानव द्वारा अपनी उदर पूर्ति हेतु इधर-उधर विचरण करने से उसे भोजन तो मिलता था। साथ ही उसे प्रकृति के विभिन्न रूपों का भी ज्ञान होता है। वह प्रकृति की विविध शक्तियों जैसे वर्षा तूफान आँधी भूकंप आदि का भी सामना करता था। इससे उसे प्राकृतिक की सुंदर स्थली कृतियों दृश्यों समयानुसार परिवर्तित रूपों का भी ज्ञान हुआ। सुबह सवेरे सूर्योदय होने पर सूर्य की लालिमा ने उसे प्रभावित किया तो शाम को पर्वतों या सागर में होने वाले सूर्यास्त से वह रोमांचित हो उठा। इसी तरह वह जब कभी किसी सुंदर झील के किनारे या पर्वत की तलहटी में या किसी हरे-भरे मैदान में विचरण करते तो उसे अद्भुत आनंद की अनुभूति होती इससे उसे अपूर्व आनंद व मानसिक सुकून प्राप्त होता और वह इन स्थानों पर बार-बार जाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार मानव के घूमंतू जीवन में आगे बढ़ने की कुछ कर गुजरने की भी प्रेरणा देती। इस प्रकार जीवन की विभिन्न घटनाओं प्रकृति के विविध रूपों व उनके बार-बार दर्शन पर्वतों घाटियों झीलों सुंदर मैदानों आदि में बार-बार जाने वह इन्हें देखकर अप्रतिम आनंद अनुभव करने की इच्छा ने पर्यटन को जन्म दिया।

ऐतिहासिक दृष्टि से पर्यटन का उद्भव जहाँ मानव की उदर पूर्ति तथा दैनिक आवश्यकताओं से जुड़ा रहा वहीं धीरे-धीरे यह मानव के मनोरंजन मानसिक शांति रोमांच प्राप्त करने की लालसा आदि से जुड़ता गया और कालांतर में यह अपने बहुआयामी रूप में प्रचलित था। दैनिक चिंताओं से मुक्ति जीवन में नवीनता आदि का अनुभव भी प्राप्त होता है। इन विविधाओं से पर्यटन के अनेक प्रकार स्पष्ट होते हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से पर्यटन को निम्नवत विभिन्न काल खण्डों में बांटा जा सकता है।

1. प्राचीन काल।
2. साम्राज्यों का काल।
3. महान यात्राओं का दौर।
4. संक्रमणकाल।
5. आधुनिककाल।

प्राचीन काल में पर्यटन :-

पाषाणकाल में जहाँ पर्यटन मानव की उदर पूर्ति मनोरंजन रोमांच आदि से जुड़ा हुआ था। वहीं पाषाणकाल हड़प्पा सभ्यता काल में यह व्यापारिक गतिविधियों से भी जुड़ा गया था। विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में हड़प्पा मेसोपोटामिया तथा मिस्र की सभ्यता के लोगों का एक दूसरे से व्यापारिक संपर्क बना हुआ था। प्राचीन काल में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुविधाएं प्रदान की। प्राचीन काल में ईरान के लोग विश्व के अनेक देशों की यात्राएँ करते थे।

प्रश्न :-2 पर्यटकों की रुचि के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक स्मारक गुफाएं।

उत्तर :- ऐतिहासिक पर्यटन की दृष्टि से भारत एक समृद्ध पर्यटन स्थल है। यहाँ प्रागैतिहासिक काल से ही पर्यटन हेतु रोमांचक पर्यटन स्थल है। प्रागैतिकहासिक मानव जीवन की झलकियाँ प्रस्तुत करती है कई महत्वपूर्ण गुफाएँ संपूर्ण भारत में पायी जाती है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से दूर भीमबेटका नामक स्थान पर प्रागैतिहसासिक मानव के आवास के रूप में आज भी वहाँ पर गुफाएँ मौजूद है। इन गुफाओं में तत्कालीन मानव जीवन में संबंधित चित्र मानव के जीवन पर पर्याप्त प्रकाश डालते है। इसी प्रकार आंध्र प्रदेश कर्नाटक महाराष्ट्र उत्तराखण्ड कश्मीर आदि राज्यों में भी प्रागैतिहासिक मानव से संबंधित गुफाएं एवं उनमें उकेरे गये शैलचित्र तत्कालीन मानव की कहानियाँ बयाँ कर रहे है। उत्तराखण्ड में लाखु उड्यार गोरख्या उड्यार फड़कानौली ल्वेथाप कसारदेवी आदि स्थानों पर स्थित गुफाएँ एवं उनमे उकेरे गये चित्र तत्कालीन मानव सभ्यता पर पर प्रकाश डालते है। भारतीय संस्कृति की अलग विशेषता है कि यहाँ का रहन-सहन खानपान सामाजिक जीवन धार्मिक मान्यताएं इसकी जीवन-शैली को अलग खड़ा करती है। इसलिए हिन्दुत्व को एक जीवन-शैली के रूप में स्वीकार किया गया न कि धर्म के रूप में। इस प्रकार भारतीय संस्कृति की अपनी विशेषताएँ विदेशी और आकर्षित होती है। यहाँ पर्यटकों की रुचि के अनेक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन स्थल है।

जिन्हें हम निम्नवत स्थल सकते हैं।

गुफाएँ :-

भारत में गुफाओं का इतिहास प्रागैतिहासिक काल से ही आरम्भ हो जाता है। क्योंकि प्रागैतिहासिक मानव जीवन से संबंधित चित्र इन गुफाओं में पाये जाते हैं। इस प्रकार मानव जीवन के आरम्भ से ही भारत में अनेक गुफाएँ मौजूद है। इनमें भीमबेतका गुफ्ककराल बुर्जहोम गोरखपा उड़यार लाखु उड़यार आदि प्रमुख है। कालांतर में मौर्य काल में बौद्ध धर्म के भिक्षुओं के लिए रहने के लिए मौर्य सम्राटों द्वारा गया की पहाड़ियों में गुफाओं का निर्माण किया गया। यहाँ पर अशोक द्वारा बनवायी गयी दो गुफाओं एक समतल आयताकार बाह्य कक्ष समान है।

अजंता की गुफाएँ :-

भारत का एक ऐतिहासिक पर्यटक स्थल महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिले में स्थित है। ये गुफाएँ जलगाँव से 64 कि०मी० या औरंगाबाद से 104 कि०मी० की दूरी पर स्थित है। ये गुफाएँ सुंदर पहाड़ियों के प्राकृतिक वातावरण में बनायी गयी है। इसलिए ये निवास तथा तपस्या हेतु सर्वाधिक उपयुक्त है। यह तो स्पष्ट नहीं है कि सर्वप्रथम किसने इन गुफाओं का निर्माण आरम्भ करवाया था।

प्रश्न :- 3 हड़प्पा संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए एवं खोज का एवं विस्तार और नगरयोजना एवं पतन के कारणों का वर्णन कीजिए :-

Ans :-

हड़प्पा संस्कृति कि विशेषताएँ इस प्रकार हैं :-

(I) सामाजिक संगठन :-

सिंधु सभ्यता का समाज मुख्यतः वर्गहीन समाज था। यह सभ्यता अपनी नगरीय योजना प्रणाली के लिये जानी जाती है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के नगरों में अपने-अपने दुर्ग थे जो नगर से कुछ ऊँचाई पर स्थित होते थे जिसमें अनुमानतः उच्च वर्ग के लोग निवास करते थे। वहीं इस सभ्यता के ~~लोग निवास~~ अंतर्गत समाज 'मातृप्रधान' था।

(II) वेशभूषा एवं आभूषण :-

सिंधु ~~एक~~ घाटी सभ्यता के मनुष्य शरीर पर दो वस्त्र धारण किया करते थे। प्रथम एक आधुनिक शाल के समान कपड़ा होता था। जिसे वह कन्धे के ऊपर तथा दाहिनी भुजा के नीचे से निकालकर पहनते थे। जिससे दाहिना हाथ कार्य करने के लिए स्वतंत्र रहे। दूसरा वस्त्र शरीर के निचले भाग में पहना जाता था। जो आधुनिक धोती के समान होता था। पता है कि इस काल में स्त्रियों और पुरुषों के वस्त्रों में विशेष अंतर नहीं था। साधारणतः सूती कपड़े पहने जाते थे परन्तु ऊनी वस्त्रों का भी प्रचलन था।

(III) कृषि फसल एवं आहार :-

सिंधु सभ्यता के मनुष्य, कृषि के आधार पर ही अपना जीवनयापन किया करते थे। इसमें मुख्य फसल गेहूँ जौ चावल मटर तिल सरसों मसूर सब्जियाँ और फल आदि थी। पता है कि सिंधु सभ्यता के मनुष्यों ने सर्वप्रथम कपास की खेती प्रारम्भ की थी। इसके अलावा हड़प्पाई लोग कृषि के साथ-साथ बड़े पैमाने पर पशुपालन भी किया करते थे।

(IV) धार्मिक जीवन :-

सिंधु निवासी निम्नलिखित देवी-देवताओं की आराधना करते थे।

(I) पेड़ की पूजा :- सिंधु घाटी सभ्यता के लोग प्रकृति प्रेमी थे। वे विशेष रूप से पीपल के पेड़ को पवित्र मानते थे। और उसकी आराधना किया करते थे।

(II) शिव की पूजा :- मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई मुहर पर अंकित देवता को भगवान शिव का आदि रूप माना जाता है। विशेष बात यह है कि भगवान शिव आर्यों के भी आराध्य देव रहे हैं।

(V) कला :-

कला एवं ललितकला की जानकारी हमें निम्नलिखित के द्वारा प्राप्त होती है।

(I) भवन निर्माण कला :-
विशाल अनागार, मकान, सुनियोजित नगर आदि उनकी कला के नमूने थे।

Pg. No. ______
Date ___/___/___

मूर्तिकला :-
सिंधु निवासी मूर्तियाँ बनाने में कुशल थे। उस समय की धातु पाषाण एवं मिट्टी की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। जिनमें देवी - देवताओं की मूर्ति मिली है।

धातुकला :-
सिंधु निवासी मूर्तियाँ सोने चाँदी तांबे आदि के आभूषणों का निर्माण करते थे। मोहनजोदड़ो से प्राप्त कांसे की नर्तकी की मिली है।

चित्रकला :- इस सभ्यता के लोगों को चित्रकला का भी ज्ञान था। जिसकी पुष्टि प्राप्त बर्तनों एवं मुहरों पर बने चित्रों से होती है।

खोज :-

हड़प्पा संस्कृति की खोज बड़ी मनोरंजक परिस्थितियों में हुई। डॉ० विपिन बिहारी सिन्हा ने लिखा है कि 1856 ई० में जॉन ब्रण्टन नामक एक अंग्रेज मुल्तान से लाहौर तक रेल की पटरियाँ बिछाने का कार्य कर रहा था। उसे इस कार्य के लिए पत्थरों की आवश्यकता पड़ी। जॉन ब्रण्टन ने सिंधु नदी के पास हड़प्पा नामक गाँव में एक टीला देखा। उस टीले में मजबूत ईंटें थी। उसने कुछ लिखा हुआ था। जिसे अभी तक कोई नहीं पढ़ सका। काफी समय तक यह रहस्य ही बना रहा। 1856 ई० कनिंघम ने हड़प्पा की यात्रा की और वहाँ के टीले के नीचे किसी बड़ी सभ्यता होने की सम्भावना जताई। 1921-1922 ई० में डा० आर डी बैनर्जी और दयाराम साहनी ने हड़प्पा में खुदाई का कार्य आरम्भ करवाया। 1922 ई० में भारतीय पुरातत्ववेत्ता डा० आर डी बैनर्जी ने मोहनजोदड़ो का अर्थ मृतकों का टीला।

(II) विस्तार :-
आरम्भ में हड़प्पा संस्कृति तथा मोहनजोदड़ो तक ही सीमित थी। धीरे - धीरे इस संस्कृति अन्य केंद्र भी प्रकाश में आने लगी। काफी समय तक एक ऐसा माना जाता रहा है कि यह महान सभ्यता केवल सिंधु नदी तक है सीमित है। पुरातत्व विभाग के सहयोग से आज इस संस्कृति के लगभग 1400 केंद्र प्रकाश में आ चुके हैं। जिनमें 925 बस्तियाँ भारत में और बाकी पाकिस्तान में है। 1935-1936 ई० में मैके तथा मार्शल ने अमेरिकान स्कूल ऑफ इण्डिक एण्ड ईरानियन स्टीज तथा बोस्टन म्यूजियम ऑफ फाईन आर्ट के संयुक्त देख-रेख में चन्हुदड़ो का उत्खनन करवाया।

हड़प्पा संस्कृति का काल :-

हड़प्पा संस्कृति कब फली - फूली इस विषय पर इतिहासकार एक मत नहीं हैं। जॉन - मॉर्शल का मत है कि हड़प्पा सभ्यता लगभग 5000 ई० पू० में फली - फूली थी। डा० व्हीलर के अनुसार हड़प्पा संस्कृति 2500 से 1500 ई० पू० के बीच पनपी थी। डा० पुसालकर हड़प्पा संस्कृति का काल को तीन भागों में विभाजित करते है।
(1) आरम्भिक काल (3500 ई० पू० 2600 ई० पू०)
(2) पूर्ण विकासकाल (2600 ई० पू० 1800 ई० पू०)
(3) उत्तर हड़प्पा काल (1800 ई० पू० से बाद का काल)

* हड़प्पा संस्कृति के पतन के कारण :*

हड़प्पा सभ्यता एक उच्चकोटि की सभ्यता थी इसके पतन के कारण कुछ इस प्रकार है :—

(I) बाढ़ :- कुछ इतिहासकारों का मत है कि सिंधु सभ्यता अथवा हड़प्पा संस्कृति सिंधु नदी की घाटी में पनपी थी। सिंधु नदी में उस समय बाढ़ आती रहती थी। हो सकता है कि सैन्धव संस्कृति की पूरी सुरक्षा करने के बावजूद उस समय के लोग बाढ़ों को न रोक पाए हों। मोहनजोदड़ो हड़प्पा तथा लोथल की खुदाई में मिट्टी की कई परतें मिली है। हड़प्पा संस्कृति का अन्त बाढ़ के द्वारा हुआ होगा।

(II) महामारी :-
कुछ विद्वानों का मत है कि उस समय सैन्धव लोगों में कोई भयंकर महामारी जैसे मलेरिया प्लेग चेचक की बीमारी फैली गई होगी। क्योंकि उस समय चिकित्सा का इतना विकास नहीं था। इसलिए भयानक महामारी द्वारा समस्त सभ्यता नष्ट हो गई होगी।

(III) भूकंप :-

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि उस हड़प्पा संस्कृति के क्षेत्र में प्राकृतिक प्रकोप जैसे भूकंप आदि आया। अनुमान है कि इस क्षेत्र की समस्त भूमि उलटी-पुलटी हो गई होगी और हड़प्पा संस्कृति पूरी तरह से नष्ट हो गई होगी।

(IV) अन्य कारण :-

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि उस समय सिन्धु घाटी ने अपना रास्ता बदल दिया होगा। जिससे हड़प्पा संस्कृति के लोगों के लिए यहाँ कृषि करना असम्भव हो गया होगा। इससे रोजगार के अवसर समाप्त हो गये।

प्रश्न :- वैदिक सभ्यता की विशेषताओं का वर्णन कीजिए :-
उत्तर :-
भारत के पश्चिमोत्तर भाग में स्थित सप्तसिन्धु प्रदेश के निवासियों की साहित्यिक अभिव्यक्ति मौखिक रूप से जिस भाषा में हुई वैदिक संस्कृत कहते है। इस भाषा में बहुमूल्य साहित्यिक परम्परा चली जो धार्मिक एवं लौकिक विषयों से भरी थी। इस कलाविधि में चार चरणों में साहित्य का विकास देखा जा सकता है।

(I) संहिता *

संहिताओं में वैदिक मन्त्रों का संग्रह है। इनके चार मुख्य रूप है ① ऋग्वेदसंहिता ② यजुर्वेदसंहिता ③ सामवेदसंहिता ④ अथर्ववेदसंहिता। इनका विभाजन वैदिक पूजा में काम करने वाले चार ऋत्विजों के कार्यों को ध्यान में रखकर हुआ है।

(II) ब्राह्मण *

ब्राह्मण - ग्रंथों का मुख्य उद्देश्य संहिताओं के मंत्रों द्वारा यज्ञों की व्याख्या करना था। इस प्रक्रिया में बहुत-सी नैतिक सामाजिक तथा राजनीतिक बातें भी आई है।

(iii) आरण्यक :-

ब्राह्मण ग्रंथों से समबद्ध आरण्यकों की रचना वनों में हुई। वैदिक कर्मकाण्ड अनुष्ठान की उत्पत्ति और उसके महत्व के विषय में ऋषियों का जो चिन्तन हुआ।

(iv) उपनिषद :-

वैदिक साहित्य के विकास के अन्तिम चरण में उपनिषद ग्रंथ आते हैं। इनमें दर्शन - शास्त्र की विवेचना हुई यद्यपि भट्ट शास्त्र - यत्र - तत्र पहले भी संहिताओं और आरण्यकों में आ चुका था।

* वैदिक साहित्य के प्रमुख ग्रन्थ :-*

(i) ऋग्वेद :-

ऋग्वेद विश्व का प्रथम व्यवस्थित उपलब्ध ग्रन्थ है सप्तसिन्धु प्रदेश में रहने वाले आर्यों ने जो अपने धार्मिक विचार तथा दार्शनिक भावनाएँ काव्य रूप में व्यक्त की थी उन्हीं का संग्रह ऋग्वेद संहिता है। ऋग्वेद के समय में जो सांस्कृतिक की धारा के निरंतर प्रवाह की प्रति होती है। ऋग्वेद के रचानाकाल को लेकर अनेक मत प्रचलित है। परम्परागत भारतीय मत है कि वेद अपौरुषेय है अर्थात् किसी पुरुष या व्यक्ति विशेष ने इनकी रचना नहीं की। आधुनिक विद्वान इससे सहमत नहीं है।

(ii) यजुर्वेद *

प्राचीन काल में यजुर्वेद की कुल 101 शाखाएँ थी इसके दो रूप है कृष्ण यजुर्वेद तथा शुक्ल यजुर्वेद। कृष्ण यजुर्वेद की सर्वाधिक प्रसिद्ध शाखा तैत्तिरीय संहिता और शुक्ल यजुर्वेद की प्रसिद्ध शाखा वाजसनेयी संहिता है। कुछ लोग इसे ही मौलिक यजुर्वेद कहलाता है। इसमे केवल मन्त्रों का संग्रह है। वेदो के अधिकारा आल्प कार यजुर्वेद पर व्याख्या लिखना अपना पहला कर्तव्य समझते है।

(iii) सामवेद *

प्राचीन ग्रंथों की सूचना के आधार पर सामवेद की 1000 शाखाएँ थी किन्तु आज तीन - चार शाखाएँ ही उपलब्ध थी। इनमें कौथुम शाखा अधिक लोकप्रिय है। सामवेद के मंत्रो का प्रयोग यज्ञ में देवताओं के आह्वान के लिए उचित स्वर के साथ उद्गाता द्वारा किया जाता था। इसलिए साम - मंत्रो का पाठ नहीं अपितु गान होता है।

(iv) अथर्ववेद *

अथर्ववेद से यज्ञ से भिन्न विषयों का विपुल संकलन है। बहुत दिनों तक कर्मकाण्ड से इसे पृथक रखा गया था। त्रयी का अर्थ तीन वेद होता है। जिसमे अथर्ववेद का समावेश नहीं होता। किन्तु वैदिक परम्परा में ही उसे महादेव कहा गया।

* शिक्षा *

यह उच्चारण का विज्ञान है जो स्वर - व्यंजन के उच्चारण का विधान करता है। इसका विस्तार प्रातिशाख्य ग्रन्थों में मिलता है। वेदों की पृथक - पृथक शाखाओं का उच्चारण बदलजाने के कारण इन्हें प्रातिशाख्य कहा जाता है।

* कल्प *

यह मुख्यतः वैदिक कर्मकाण्ड का प्रतिपादन करने वाले वेदांग है। कल्प का अर्थ है विधान। यज्ञ - सम्बन्धी विधान कल्प सूत्रों मे दिए गए कल्प के चार भेद हैं। ① श्रौतसूत्र ② गृह्यसूत्र ③ धर्मसूत्र ④ शुल्वसूत्र कहते हैं।

* व्याकरण *

इसे वेदों का मुख्य कहा गया है। इस शास्त्र में प्रकृति और प्रत्यय के रूप में विभाजन करके पदों की व्युपत्ति बतलाई जाती है। व्याकरण की बहुत लंबी परम्परा इंद्र आदि वैयाकरणों से चली

* निरुक्त *

इसका अर्थ है निर्वचना वैदिक शब्दों का अर्थ व्यवस्थित रूप से समझना ही निरुक्त का प्रयोजन है। इस समय यास्क - रचित निरुक्त ही एक मात्र उपलब्ध निरुक्त है। वैदिक शब्दों का संग्रह निघण्टु के रूप में प्राप्त होता है।

* ज्योतिष *

यह काल का निर्धारण करने वाला वेदांग है। वैदिक यज्ञ काल की अपेक्षा रखते हैं। और वे किसी निश्चित काल में ही सम्पादित करते हैं। तभी उनका फल मिलता है। इसका निश्चय ज्योतिष करता है। काल का विभाजन मुहूर्त का निश्चय ग्रहों की गति का निर्धारण इत्यादि ज्योतिष के ही विषय है। लागधाचार्य ने इन कार्यों के लिए वेदांग ज्योतिष नामक ग्रंथ लिखा है।

* छन्द *

यह पद्यबद्ध वेदमंत्रों के सही - सही उच्चारण के लिए उपयोगी वेदांग है। इसमें वैदिक मन्त्रों के चरणों का ज्ञान होता है। इसका ज्ञान वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के लिए आवश्यक है। इसमें छन्द शास्त्र का महत्व सिद्ध होता है। वेदों में सात मुख्य छन्द प्रयुक्त है। ① गायत्री ② अनुष्टुप ③ त्रिष्टुप ④ बृहती ⑤ जगती ⑥ पङ्क्ति ⑦ उष्णिक।

* वेदांग *

कालक्रम से वैदिक संस्कृत के स्थान पर लौकिक संस्कृत का प्रचलन होने पर वैदिक मंत्रों का उच्चारण करना तथा अर्थ समझना कठिन हो गया। यास्क ने कहा कि वैदिक अर्थों को समझने में कठिनाई का अनुभव करने वाले लोगों ने निरुक्त तथा अन्य वेदांगों की रचना की।

प्रश्न 8। महावीर स्वामी की जीवन और शिक्षाएँ का वर्णन कीजिए 8—

उत्तर 8 महावीर स्वामी का जन्म 8

महावीर स्वामी का 599 ई० पू० में वैशाली के निकट कुण्ड नामक स्थान पर हुआ। इनके बचपन का नाम वर्धमान था। कुछ इतिहासकार महावीर स्वामी की जन्म तिथि 540 ई० पू० मानते हैं उनके पिता का नाम सिद्धार्थ था। जो जनत्रिका गणराज्य के प्रधान थे। उनकी माता का नाम त्रिशला था जो लिच्छवी वंश के शासक की बहन थी। जैन साहित्य के अनुसार वर्धमान के जन्म से पूर्व उनकी माता त्रिशला ने एक रात चौदह स्वप्न देखे। उसके इन स्वप्न के बारे में अपने पति को बताया। सिद्धार्थ ने ज्योतिषी को बुलाकर इन स्वप्नों के विषय में पूछा तो उन्होंने बताया कि उनके घर में जन्म लेने वाला पुत्र तो चक्रवर्ती सम्राट बनेगा या महान तपस्वी।

* विवाह तथा गृहत्याग 8*

बचपन काल से ही महावीर अर्थात् वर्धमान एकाकी ज्यादा पसंद करते है। यद्यपि उनकी शिक्षा का प्रबन्ध तथा पालन-पोषण राजकीय ठाठ-बाट से किया गया था परंतु फिर भी महावीर का मन सांसारिक कार्यों में नहीं लगता है। यही कारण युवा होने पर उनका विवाह यशोदा नामक राजकन्या के साथ कर दिया।

* ज्ञान प्राप्ति *

गृह त्याग के पश्चात महावीर स्वामी ज्ञान की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकने लगे। कल्पसूत्र के अनुसार भिक्षु महावीर ने एक वर्ष और एक मास तक वस्त्र धारण किए।

* धर्म प्रचार *

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात महावीर स्वामी ने एक स्थान से दूसरे पर घूम-घूम कर अपनी शिक्षाओं का प्रसार जन-साधारण जनता में किया गया। केवल बरसात के चार महीने आराम करते थे।

* महावीर स्वामी की मृत्यु 8*

महावीर स्वामी ने लगभग 30 वर्षों अपनी शिक्षाओं का प्रसार किया। 72 वर्ष की आयु में अर्थात् 468 ई० पूर्व में उनका राजगार के निकट पावापुरी नामक स्थान पर देहांत हो गया।

* जैन धर्म की शिक्षाएँ *

महावीर स्वामी अर्थात् जैन धर्म की शिक्षाएँ इस प्रकार से है।

* मोक्ष *

जैन धर्म में निवृत्ति मार्ग का बहुत महत्व है। जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का

एकमात्र उदय मोक्ष की प्राप्ति है। मोक्ष के द्वारा ही मनुष्य भोग एवं तृष्णाओं से विमुक्त हो सकता है।

* त्रिरत्न *

महावीर स्वामी के अनुसार जैन धर्म के अनुयायियों को जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में विश्वास करना चाहिए। अनुयायियों को जन्म मृत्यु के बंधनों से मुक्त होने के लिए त्रिरत्न का पालन करना चाहिए।

(I) सम्यक् श्रद्धा :-

सम्यक् श्रद्धा के अनुसार जैन धर्म के अनुयायियों का जैन 24 तीर्थंकरों में विश्वास करना चाहिए उनके प्रति श्रद्धा भाव रखना चाहिए।

(II) सम्यक् ज्ञान :-

इसके अनुसार प्रत्येक जैनी को तीर्थंकरों अर्थात जैन धर्म के ग्रन्थों एवं उपदेशों से सच्चा ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

(III) सम्यक् चरित्र :-

सम्यक चरित्र के अनुसार जैन धर्म के अनुयायियों को काम क्रोध मोह आदि को त्याग कर अपने चरित्र को सुधारना चाहिए।

* कर्म का सिद्धांत :- *

जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक जैनी को कर्म के सिद्धांत में विश्वास करना चाहिए। महावीर स्वामी व्यक्ति के सुख-दुख का मूल कारण कर्मों के फल को ही मानते है।

* पाँच महाव्रत *

(I) सत्य :-

जैन धर्म के अनुयायियों को असत्य को त्याग कर सत्य को अपनाना चाहिए। व्यक्ति को जाने या अनजाने में भी झूठ नहीं बोलना चाहिए।

(II) अहिंसा :-

जैन धर्म के अहिंसा का बहुत महत्व है। महावीर स्वामी के अनुसार जैन धर्म को मानने वाले को हमेशा कम अहिंसा का पालन करना चाहिए।

(III) अस्तेय (चोरी न करना) :-

जैन धर्म के अनुसार जैन धर्म के अनुयायियों को किसी भी कीमत पर अर्थात् जाने व अन जाने में चोरी न करना चाहिए।

(IV) अपरिग्रह धन का संग्रह :-

महावीर स्वामी के अनुसार व्यक्ति को धन का संग्रह नहीं करना चाहिए क्योंकि धन की अधिकता ही संसार के प्रति आकर्षण उत्पन्न करती है।

(5) ब्रह्मचर्य :- जैन धर्म के अनुयायियों को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। उन्हें इन स्त्रियों को देखना या छूना भी नहीं चाहिए।

* कठोर तपस्या *

जैन धर्म के अनुसार व्यक्ति को अपनी आत्मा पर काबू पाने और मोक्ष की प्राप्ति के लिए कठोर तपस्या करनी चाहिए।

* शुद्ध आचरण *

जैन धर्म के अनुसार व्यक्तियों को शुद्ध आचरण पर बल देना चाहिए। महावीर स्वामी के अनुसार श्रेष्ठ व्यक्ति वही है जो सदाचार गुणों से युक्त है।

* तीर्थ की पूजा *

महावीर स्वामी के अनुसार उनके अनुयायियों को जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों की पूजा करनी चाहिए उनके बताए गए मार्ग पर चलना चाहिए।

* ईश्वरीय सत्ता में विश्वास *

महावीर स्वामी ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं रखते थे। वे तीर्थंकरों को ही ईश्वर मानते थे। ईश्वर की उपासना शुद्धि पर बल देते हैं।

* वेदों तथा संस्कृत भाषा की पवित्रता में अविश्वास

महावीर स्वामी वेदों तथा संस्कृत भाषा में विश्वास नहीं करते थे। उनके अनुसार वेद ईश्वरीय ज्ञान नहीं है। संस्कृत भाषा देवताओं ने बनाई गई है।

* जाति - प्रथा में अविश्वास *

महावीर स्वामी के अनुसार जैन धर्म के अनुयायियों को जाति - प्रथा में विश्वास नहीं करना चाहिए। उनके अनुसार जन्म से कोई व्यक्ति छोटा या बड़ा नहीं होता।

* निर्वाण *

जैन धर्म में निर्वाण का बहुत महत्व है। महावीर स्वामी के अनुसार जैन धर्म का एकमात्र लक्ष्य मनुष्य का निर्वाण प्राप्त कराना है।

* निष्क्रमण संस्कार *

जैन धर्म मे गृह त्यागते समय या भिक्षु बनते समय निष्क्रमण संस्कार किया जाता था। यह संस्कार किसी शुभ दिन पर सम्पन्न किया जाता है। आमतौर पर यह चतुर्थी एवं अष्टमी के दिन किया जाता है।

* जैन धर्म का विभाजन *

महावीर स्वामी के समय ही जैन धर्म मे मतभेद हो गए थे। जमालि नामक जैन भिक्षु जो महावीर स्वामी की बहन सुदर्शना का पुत्र था। महावीर स्वामी के साथ क्रियमाणकृत सिद्धांत पर मतभेद हो गया।

Pg. No. ____ Data / /

प्रश्न :- 2 जैन धर्म और बौद्ध धर्म की उत्पत्ति के कारण :

उत्तर :- * जैन धर्म *

छठी शताब्दी की धार्मिक क्रान्ति में जैन धर्म ने विशेष योग दिया। वह तत्कालीन धर्मों से एक प्रमुख स्थान रखता है। जिन्होंने भारत के धार्मिक जीवन पर पर्याप्त प्रभाव डालता है। यद्यपि बौद्ध धर्म की भांति जैन धर्म कभी भी देशव्यापी धर्म न बना सका फिर भी यह महत्वपूर्ण बात है कि वह अपनी जन्मभूमि भारत में बौद्ध धर्म की अपेक्षा अधिक चिरस्थायी हुआ है। पार्श्वनाथ ने अपने भिक्षुओं के लिए मुख्य चार व्रतों की व्यवस्था की :

(I) अहिंसा।
(II) सत्य बोलना।
(III) अस्तेय (चोरी न करना।)।
(IV) अपरिग्रह (संपत्ति का त्याग)।

* महावीर स्वामी के सिद्धांत *

(I) निवृत्ति मार्ग :

बौद्ध धर्म की भांति जैन धर्म भी निवृत्तिमार्गी है संसार के समस्त सुख दुःखदायक है तथा व्याधिस्वरूप है।

(II) कर्मवाद और पुर्नजन्म *

जैन धर्म अनीश्वरवादी है। ईश्वर विश्व का कर्ता एवं नियता नहीं है।

Pg. No. ____ Date / /

मनुष्य स्वंय अपना भाग्यविधाता है। वह अपने अच्छे - बुरे कर्मों का फल स्वंय भोगना पड़ता है।

(III) मोक्ष या निर्वाण *

मोक्ष प्राप्त करना जैन धर्म का चरम उद्देश्य है। प्रत्येक प्राणी एवं जन्तु के दो अंश होते है। भौतिक अंश तथा आत्मिक अंश। भौतिक अंश अशुद्ध अन्धकारयुक्त एवं नाशवान होता है। और आत्मिक अंश विशुद्ध प्रकाशवान एवं अनश्वता है।

(IV) अंहिसा :*

जैन धर्म परम अंहिसा वादी है। उसके अनुसार जड़ - चेतना सभी में आत्मा है। पृथ्वीकाय जलकाय वायुकाय अग्निकाय वनस्पतिकाय तथा चलने फिरने वाले जीव के प्रति सम्पूर्ण व्यवहार ही अंहिसा है। अंहिसा की परिभाषा वचन और कर्म से की गई है।

* पाँच महाव्रत *

अंहिसा महाव्रत :

(I) किसी प्रकार की अहिंसा नहीं होनी चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित नियमों का पालन आवश्यक है।
(II) पैरों से कीटाणुओं की हत्या न हो।
(III) मधुर वाणी बोलो जिससे किसी को शब्दाघात न पहुँचे।

(II) सत्य - भाषण महाव्रत :-

(I) क्रोध आने पर मौन रहे।
(II) बिना सोचे विचार न बोले।
(III) भयभीत होने पर भी असत्य न बोले।

(III) अस्तेय महाव्रत :-

(I) बिना आज्ञा के किसी के घर में प्रवेश न करे।
(II) बिना गुरु की आज्ञा के भोजन ग्रहण न करे।

(IV) अपरिग्रह महाव्रत :-

इसके अनुसार भिक्षुओं को किसी भी प्रकार का धन या वस्तु संग्रह नहीं करना चाहिए। क्योंकि उससे आसक्ति उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त इन्द्रियों के विभिन्न विषयों में भी अनासक्ति अपेक्षित है।

(V) ब्रह्मचर्य महाव्रत :-

(I) किसी स्त्री से बात न करे।
(II) किसी स्त्री को न देखे।
(III) स्वल्पाहार करे।
(IV) स्त्री - सम्भोग का ध्यान भी न करे।

(5) पंच अणुव्रत :-

सभी लोग संसार त्यागकर भिक्षु जीवन - यापन नहीं कर सकते इसलिए जैन गृहस्थ के लिए पाँच महाव्रत बताये गये हैं।

* बौद्ध धर्म *

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक का नाम सिद्धार्थ गौतम बुद्ध था। कौशल के देश उत्तर में कपिलवस्तु शाक्य क्षत्रियों का एक छोटा - सा गणराज्य था। यहाँ शुद्धोधन नामक राजा राज्य करते थे। इनके दो पत्नियाँ थी। मायादेवी तथा प्रजापति देवी। मायादेवी के गर्भ से नेपाल की तराई में स्थित लुम्बिनी वन में ईसा पूर्व 623 में बालक सिद्धार्थ का जन्म शालवृक्ष के नीचे हुआ। आगे चलकर सिद्धार्थ महात्मा बुद्ध कहलाये।

* बौद्ध धर्म की विशेषताएँ *

बौद्ध धर्म के सिद्धांत त्रिपिटक के मूल अंश में सन्निहित है। महाबुद्ध ने अपने धर्म की नैतिक व्याख्या की थी। इसी आधार पर कुछ विद्वानों का मत था। कि बौद्ध धर्म वास्तव में धर्म नहीं वरन आचार शास्त्र है।

* बौद्ध धर्म और उसके सिद्धांत *

बौद्ध धर्म एक व्यवहारवादी धर्म है। वह मानव के चरमोत्कर्ष का साधन है। बुद्ध की दृष्टि से इहलोक और परलोक में धर्म ही मनुष्य में श्रेष्ठ है। वह जीवन का विषय है मृत्यु का नहीं।

मूल सिद्धांत :-

(1) चार आर्य सत्य :-

बौद्ध धर्म मूलाधार चार आर्य सत्य है :-
① दुःख ② दुख समुदाय ③ दुखः निरोध ④ दुख निरोधगामी

(I) दुख :-

सम्पूर्ण संसार दुखमय है। जन्म बुढापा मृत्यु शोक अप्रिय का संयोग प्रिय का वियोग तथा इच्छित वस्तु की अप्राप्ति आदि दुःख है।

(II) दुख समुदाय :-

सारे दुःख की जड़ तृष्णा (इच्छा) है। मनुष्य जीवनपर्यंत तृष्णा से घिरा रहता है। काम तृष्णा भाव तृष्णा विभव तृष्णा। रूप शब्द गंध रस स्पर्श मानसिक वितर्क और विचारों से मनुष्य आसक्ति करने लगता है।

(III) दुखः निरोध :-

दुख तभी समाप्त होगा जब उसका मूल कारण (तृष्णा) समाप्त हो जाए। तृष्णा या वासना के नाश से जन्म मरण और उसके साथ लगे हुए दुखों का अन्त होगा।

(IV) दुख निरोधमार्ग :-

अब प्रश्न यह उठता है कि इस मूल कारण (तृष्णा) का निवारण कैसे किया जाए। बुद्ध ने बताया है कि तृष्णा के नाश के लिए मनुष्य को स्वयं में वेदना, संस्कार और विज्ञान का नाश करना पड़ेगा। यह नाश तभी संभव है जब बुद्ध द्वारा बताये अष्टमार्ग का अनुसरण किया जाए।

(2) अष्टमार्ग :-

इसका समाहार प्रज्ञा शील और समाधि में हो जाता है।

(I) शील :-

इसका सम्बन्ध सुआचरण से है। इसमें निम्नलिखित तत्व सम्मिलित है।
① सम्यक् वाक् - जो वाणी विनीत और सत्य हो।
② सम्यक् कर्म - सत्कर्म।
③ सम्यक् आजीव - जीवनयापन की विशुद्ध प्रणाली।

(II) समाधि :-

चित्त की एकाग्रता को समाधि कहते है। इसमें निम्न लिखित तत्व है।
① सम्यक् व्यायाम - धर्म और ज्ञान के साथ प्रयत्न।
② सम्यक् स्मृति - धर्म के प्रति सावधान जागरूकता।
③ सम्यक् समाधि - मन और मन की एकमता।

(III) कर्म :-

बौद्ध धर्म में कर्म प्रधान है। बौद्ध धर्म में कर्म का वही स्थान है। जो आस्तिक धर्मों में ईश्वर का। बुद्ध के अनुसार प्राणी कर्मस्वक है।

(IV) निर्वाण :-

बौद्ध धर्म का एकमात्र लक्ष्य निर्वाण प्राप्त करना है। इसका अर्थ है आवागमन के चक्कर से विमुक्ति। निर्वाण से तात्पर्य है परम ज्ञान।

प्रश्न-3 अशोक के धर्म या धम्म से क्या अभिप्राय है?

उत्तर :- परिचय :-

अशोक मौर्यवंश का एक महान चक्रवर्ती सम्राट था। इन्होंने लगभग 269- 232 ई० पू० तक शासन किया। कलिंग युद्ध अशोक के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना है। यह युद्ध 261 ई० पू० में अशोक के राज्याभिषेक के 9 वें वर्ष में घटित हुआ। यह युद्ध सम्राट अशोक और कलिंग राज्य के बीच लड़ा गया।

अशोक का धम्म :-

बौद्ध धर्म को अपनाने के बाद अशोक ने कई धार्मिक रणनीतियों को अपनाया तथा विचारों को जोड़ा। इन्हीं विचारों और रणनीतियों को धम्म कहा गया। धम्म नैतिकता पर आधारित सभी धर्मों का मिला जुला रूप था।

(I) शिलालेख :-

शिलालेख जिसका अर्थ पत्थरों पर लिखना। अशोक ने न केवल धर्म बल्कि अपने जीवन के अन्य घटनाओं को भी प्रचारित करने के लिए शिलालेखों का निर्माण करवाया। अशोक से संबंधित कुल 14 शिलालेख प्राप्त हुए हैं।

(II) स्तंभ लेखन :-

स्तंभ एक पीलर की तरह होता है। जिसमें लिखावट के साथ-साथ पशु आकृति बनी होती है

उसके माध्यम से भी अशोक ने धार्मिक भावनाओं का प्रचारित करने का प्रयास किया। स्तंभों की कुल संख्या 7 थी।

(III) स्तूपों का निर्माण :-

बौद्ध धर्म के गुरूओं या दार्शनिकों के अवशेषों को सुरक्षित रखने के लिए एक विशेष प्रकार का स्थल बनाया जाता था जिसे स्तूप कहा जाता है। अशोक ने लगभग 84,000 स्तूपों का निर्माण करवाया था।

(IV) धम्म महामात्रों की नियुक्ति :-

अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार- प्रसार के लिए धम्म महामात्रों की नियुक्ति की थी। यह एक प्रकार का पद होता था। जिसमें बौद्ध भिक्षुओं को प्रत्येक पाँच वर्षों में घूम-घूमकर समाज के लोगों को धार्मिक मामलों में जागरूक करना पड़ता था।

(V) धार्मिक यात्राएँ :-

अशोक ने अपने शासन के 10 वर्षों में बोध गया और 20 वर्ष में रूमिनदेई (लुम्बिनी) की यात्रा की। यह यात्रा अशोक ने लोगों को धार्मिक मामलों में जागरूक करने के लिए था। ये अपनी प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत करना चाहते थे।

Pg. No. Date / /

अशोक के धम्म की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए :-

अपने प्रारम्भिक काल में अशोक हिन्दू धर्म का अनुयायी था। परन्तु कलिंग युद्ध के पश्चात वह बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया। बौद्ध धर्म का अनुयायी होते हुए भी अशोक ने अपनी प्रजा को जिस धर्म पालन का आदेश दिया वह सार्वभौम धर्म था अर्थात् ऐसा धर्म जिसमें सभी धर्मों के सद्गुणों का समावेश किया गया था। अशोक के धर्म की निम्नलिखित विशेषताएँ थी।

(1) सर्वभौमिकता :-

अशोक के धर्म की प्रमुख विशेषता सार्वभौमिकता है अर्थात् उसने अपने धर्म में सभी धर्मों के सद्गुणों का समावेश किया।

(II) अनुशासन तथा शिष्टाचार :-

अशोक ने अपने धर्म में अनुशासन तथा शिष्टाचार को भी विशेष महत्व दिया है। उसने अपने शिलालेखों में उत्कीर्ण किया कि माता - पिता की आज्ञा का पालन होना चाहिए। तथा इसी प्रकार गुरुजनों की आज्ञा का भी पालन होना चाहिए।

(3) अशोक ने सेवकों मित्रों तथा ब्राह्मणों के साथ सद् - व्यवहार करने पर भी बल दिया।

(4) अशोक ने धार्मिक आडम्बरों का विशेष विरोध किया तथा सत्य बोलने तथा सद् - आचरण पर विशेष बल दिया।

Pg. No. Date / /

(5) अशोक के अभिलेख :-

अशोक के अभिलेखों में धम्म शब्द का कोई बार वर्णन आया है। किंतु इस धम्म शब्द का सही अर्थ क्या है इस बात पर विद्वानो में बड़ा ही मतभेद है। फ्लीट का मत है कि अशोक ने जिस धम्म का प्रतिपादन किया है। वह वस्तुतः राजधर्म है। भंडाकर सेनार्ट हुल्श ने अशोक के धम्म को उपासक बौद्ध धर्म कहा है

(6) स्तंभलेख :-

स्तंभलेख 2 और 7 में अशोक वो गुण बदलाते है। जो धम्म के उपादान है। उपासिनव पापहीनता बहुकल्यान बहुकल्याण दया दान सच पवित्रता। और इन गुणों में व्यवहार में कैसे लाया जायेगा। अशोक इस संबंध में कर्तव्यों की गणनाऐं करते है। जो विभिन्न लेखों मे थोड़ा-थोड़ा भिन्न है। अपने धम्म के अन्याय तत्वों का उल्लेख करते हुए अपने द्वितीय शिलालेख में कहता है कि माता - पिता की उचित सेवा सभी प्राणियो के प्रति आदर भाव तथा गुरुओं का सत्कार ही श्रेयस्कर है।

अशोक ने तेरहवे शिलालेख में धम्म विजय के ही वास्तविक विजय माना है। वह प्रेम से सुरक्षित होता है। इन सारी विशेषताओं को देख कर यह स्पष्ट होता है कि अशोक का धम्म रूढ़िवादी दर्शन मूलक कर्मकाण्डवादी आदि न था।

(7) **अहिंसा :**

कलिंग युद्ध के उपरांत अशोक ने अहिंसा पर विशेष रूप से बल दिया। प्रथम शिलालेख के अनुसार उसने उन पर्वों को बंद करवा दिया। जिसमें पशु की बलि होती थी। जिनके घर में पशुओं का मांस पकता था। उसे अशोक ने एक आदेश द्वारा उसे भी बंद करवा दिया।

(8) **नैतिक आदर्शों की प्रधानता :-**

अशोक ने नैतिक आदर्शों पर विशेष रूप से बल दिया। उसका कथन था कि प्रत्येक प्राणी को ब्राह्मणों श्रमिकों साधू आदि के प्रति उदारता का व्यवहार करना चाहिए तथा जीवन में सदा सत्य का पालन करना चाहिए।

(9) **शुद्ध जीवन अपनाने पर बल :-**

अशोक का कथन था कि मनुष्य को यथासंभव शुद्ध और पवित्र जीवन व्यतीत करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि वह हर एक पापों से बचे। जैसे - ईर्ष्या क्रोध निष्ठुरता उग्रता तथा अभिमान अतः मनुष्य को यथासंभव इनसे बचना चाहिए।

प्रश्न 64 मौर्य की अर्थव्यवस्था अथवा मौर्य काल में प्रमुख स्रोत का वर्णन करें।

मौर्य काल की अर्थव्यवस्था :-

मौर्यकालीन आर्थिक व्यवस्था का आधार कृषि था। मौर्यकालीन कृषि के क्षेत्र में लोहे के उपकरणों के प्रयोग के कारण उत्पादन की मात्रा बढ़ गयी थी। कृषि के अलावा इस काल में धीरे-धीरे व्यापार वाणिज्य का महत्व भी बढ़ने लगा था। बुद्ध युग में ही द्वितीय नगरीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। इस काल में पक्की ईंटों का प्रयोग होने लगा। और नगरीय संरचना व्यव स्थित होने लगी थी।

(1) **अर्थशास्त्र :-**

अर्थशास्त्र में नयी भूमि पर कृषि के विकास को प्रोत्साहन देने की बात की गई है। क्योंकि ताकि राजस्व में वृद्धि हो सके। इस ग्रंथ में घने बसे हुए क्षेत्रों से लोगों को अन्य क्षेत्रों में बसने के लिए प्रोत्साहन देने की बात की गई है। युद्ध के समय में भी सैनिकों को खेतों को हानि न पहुँचाने का आदेश रहता था। कृषि को क्षति पहुँचाने वाले कीड़े मकोड़े तथा पशुओं - पक्षियों को नष्ट करने के लिए राज्य की ओर से गोपालक तथा शिकारी नियुक्त किये जाते हैं।
राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि पशुपालन तथा वाणिज्य पर आधारित थी। जिसे सम्मलित रूप से कौटिल्य ने वार्ता कहा है।

(I) कृषि का विकास :-

(i) मौर्य काल में पहली बार राज्य की ओर से बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने तथा सिंचाई के साधनों के विकास द्वारा कृषि उत्पादन में वृद्धि के निमित संगठित प्रयास किया गया।

(ii) जो भूमि कृषि योग्य ना हो उसे यदि कृषि योग्य बना ले तो वह भूमि उससे वापस नहीं ली जाएगी।

(iii) कृषि की दृष्टि से अविकसित क्षेत्रों में बंदियों तथा राजकीय दासों को बसाया जाता था।

(iv) चाणक्य ने शूद्रों को अधिक जनसंख्या वाले भाग से हटाकर कम जनसंख्या वाले अविकसित क्षेत्रों में बसाने की सलाह दी गई।

(II) भूमि एवं कर :-

स्वतंत्र किसानों पर दो प्रकार का भूमिकर लगाया जाता था :-

(i) भूमि के उपयोग के लिए।
(ii) उत्पादन के एक भाग के रूप में।

- किसानों से उसकी उपज का 1/6 से 1/4 भाग भूमि कर के रूप में लिया जाता था।
- राजकीय भूमि से प्राप्त आय को सीता कहा।

- व्यक्ति को भूमि के क्रय- विक्रय का अधिकार था।

मौर्यकाल के प्रमुख स्त्रोत इस प्रकार है :-

मौर्य इतिहास के दो प्रकार के स्त्रोत है। एक साहित्यिक और दूसरा पुरातात्विक। साहित्यिक स्त्रोतों में कौटिल्य का अर्थशास्त्र विशाखा दत्त का मुद्रा राक्षस शामिल है। मेगस्थनीज की इंडिका बौद्ध साहित्य और पुराण भी इसमें शामिल है।

साहित्यिक स्त्रोत :-

(क) कौटिल्य का अर्थशास्त्र :-

यह कौटिल्य द्वारा राजनीति और शासन पर लिखी गई पुस्तक है। इसमें मौर्य काल की आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति का पता चलता है। कौटिल्य मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री थे।

(ख) मुद्राराक्षस :-

यह पुस्तक गुप्तकाल में विशाखा दत्त लिखी गई थी। पुस्तक सामाजिक - आर्थिक स्थितियों पर प्रकाश डालने के अलावा यह भी बताती है कि कैसे चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की मदद से नंदो को हराया था।

(ग) इंडिका :-

इंडिका के लेखक मेगस्थनीज थे।

जो चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में सेलेकस निकेटर के राजदूत थे। इसमें मौर्य साम्राज्य में प्रशासन, जाति व्यवस्था और भारत में गुलामी की अनुपस्थिति को दर्शाया गया है।

(घ) बौद्ध साहित्य :-

जातक जैसे बौद्ध ग्रंथ मौर्य काल की सामाजिक आर्थिक स्थितियों को दर्शाते हैं जबकि बौद्ध इतिहास महावंश और दीपवंश श्रीलंका में बौद्ध धर्म फैलाने में अशोक की भूमिका पर प्रकाश डालते हैं।

(ङ) पुराण :-

पुराणों से हमें मौर्य शासकों की सूची और कालक्रम का पता चलता है।

पुरातात्विक स्त्रोत :-

अशोक के शिलालेख :-

रॉक शिलालेखों, स्तंभ शिलालेखों और गुफा शिलालेखों के रूप में अशोक के शिलालेख भारतीय उपमहाद्वीप में विभिन्न स्थानों पर पाए जाते हैं। इन शिलालेखों को जेम्स प्रिंसेप ने 1837 ई० में पढ़ा था। अधिकांश शिलालेख मुख्य रूप से जनता के लिए अशोक की उद्घोषणाएँ हैं। जबकि उनमें से कुछ में अशोक द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार करने का वर्णन किया है।

सामग्री अवशेष :-

एनबीपीडब्लू चाँदी और तांबे के पाँच चिह्नित सिक्के जैसी सामग्री मौर्य काल पर प्रकाश डालती है।

अशोक के 14 शिलालेख और उनकी सामग्री :-

(I) पशु बलि पर रोक लगाता है।
(II) सामाजिक कल्याण के उपायों को दर्शाता है।
(III) ब्राह्मणों का सम्मान।
(IV) बड़ों का आदर करना।
(V) धम्म महामात्रों की नियुक्ति और उनके कर्तव्य।
(VI) धम्म महामात्रों को आदेश।
(VII) सभी धार्मिक संप्रदायों के बीच सहिष्णुता की आवश्यकता
(VIII) धम्म यात्राएँ।
(IX) निरर्थक समारोहों और अनुष्ठानों का त्यागना।
(X) धर्म के स्थान पर धम्म का प्रयोग विजय के युद्ध
(XI) धम्म - नीति की व्याख्या।
(XII) सभी धार्मिक सम्प्रदायों से सहिष्णुता की अपील।
(XIII) कलिंग युद्ध।
(XIV) लोगों को धार्मिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा

मौर्य साम्राज्य की नींव ने भारत के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत की थी। यह वह समय था जब भारत में पहली बार राजनीतिक एकता प्राप्त हुई है। इसके अलावा कालक्रम और की सटीकता के कारण इस काल का इतिहास लेखन भी स्पष्ट हो गया है।

Unit - 3

प्रश्न:- गुप्तकाल को स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है।

उत्तर:- गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है। गुप्तकाल को प्राचीन भारतीय इतिहास में वही स्थान प्राप्त है। जो यूनान के इतिहास में पेरिकलीज के शासन काल को प्राप्त है। गुप्तकाल में चन्द्रगुप्त प्रथम समुद्रगुप्त विक्रमादित्य तथा स्कन्दगुप्त जैसे शासक गद्दी पर बैठे जिन्होंने गुप्त साम्राज्य को विकास की ऊँचाई तक पहुँचाया उनका साम्राज्य लगभग सम्पूर्ण भारत पर फैला हुआ था। जिसमें चारों ओर शांति ही शांति है। कृषक तथा आम जनता खुशहाल थी। विदेशों से भारत के अच्छे व्यापारिक सम्बन्ध थे। उस काल में भारत ने राजनीति सामाजिक आर्थिक धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति की।

गुप्तकाल एक स्वर्ण युग इस प्रकार था :-

(I) विशाल साम्राज्य :-

गुप्त शासकों ने भारत में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत लगभग पाँच शताब्दियों तक छोटे - छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभाजित रहा। इसके कुछ प्रदेशों पर हिन्द - बैक्ट्रियन शक कुषाण आदि विदेशी जातियों का शासन स्थापित था। जो प्रत्यक्ष रूप में उसके साम्राज्य तथा शासन के अंतर्गत था।

(II) कुशल शासन प्रबंध :-

गुप्त सम्राटों ने भारत में एक उच्च कोटि के शासन प्रबन्ध की स्थापना की। उनका शासन प्रबंध प्रजा हित पर आधारित था। चीनी यात्री फाह्यान ने अपने ग्रंथ की - की में उस समय के शासन प्रबंध की प्रशंसा की सभी गुप्त शासकों का एकमात्र उद्देश्य प्रजा की भलाई करना था। उस समय लोगों को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त थी। जनता पर किसी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं था। कोई भी व्यक्ति स्वतंत्र रूप से देश के किसी भी भाग में भ्रमण कर सकता था।

(III) सामाजिक उन्नति :-

गुप्तकालीन समाज बहुत उन्नत था। समाज परम्परागत आधार पर चार वर्गों ① ब्राह्मण ② क्षत्रिय ③ वैश्य ④ शूद्र में बंटा हुआ था। इनके अलावा प्रत्येक जाति में अनेक प्रजातियाँ काय थी। जाति- प्रथा के नियम कठोर होते हुए लोग दूसरी जातियों से सम्पर्क रखते थे।

(IV) आर्थिक सम्पन्नता :-

गुप्तकाल में लोगों की आर्थिक दशा बहुत उन्नत थी। उस समय लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि करना था। कृषि हलों तथा बैलों से की जाती थी। वर्ष में दो फसलें बोई जाती थी। कृषि पूरी तरह वर्षा पर निर्भर थी। इसके बावजूद झरनों तालाबों कुओं नदियों झीलों आदि से भी खेतों की सिंचाई की

जाती थी। सरकार कृषकों की भलाई के लिए कार्य करती थी। गुप्तकाल में स्कन्दगुप्त ने सुदर्शन झील का निर्माण करवाया।

(V) धार्मिक सहनशीलता :-

गुप्त शासक हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। इसके बावजूद वे किसी भी धर्म की आलोचना नहीं करते थे। उन्होंने सभी लोगों को पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान कर रखी है। भले ही वे ब्राह्मणों को दान देते थे। परन्तु उन्होंने कभी भी जैन धर्म और बौद्ध धर्म का अनादर नहीं किया। गुप्त सम्राटों को बौद्ध धर्म की सहायता दी जाती है।

(VI) हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान :-

गुप्तकाल में हिंदु धर्म ने बहुत प्रगति की। चन्द्रगुप्त समुद्रगुप्त द्वितीय कुमारगुप्त तथा स्कन्दगुप्त आदि सभी गुप्त शासक थे। उन्होंने हिन्दू धर्म के उत्थान के लिए अनेक कार्य किये। गुप्तकाल में हिन्दू पवित्र ग्रन्थों जैसे रामायण महाभारत आदि रूप प्रदान थे।

(VII) शिक्षा का विकास :-

गुप्तकाल में शिक्षा का भी बहुत विकास हुआ। सभी गुप्त शासक उच्चकोटि के विद्वान थे। इसलिए वे शिक्षा के महत्व को समझते थे। उन्होंने शिक्षा के विकास की ओर बहुत ध्यान दिया। उस समय शिक्षा ब्राह्मण एवं गुरु के घर मन्दिरों तथा मठों में प्रदान की जाती है।

(VIII) साहित्य का विकास :-

गुप्त काल में शिक्षा के साथ-साथ साहित्य का भी बहुत विकास हुआ। सभी गुप्त शासक साहित्य प्रेमी थी। उन्होंने अपने दरबार में अनेक कवियों विद्वानों साहित्कारों तथा वैज्ञानिकों को आश्रय प्रदान कर रखा था। गुप्त शासकों ने संस्कृत साहित्य के उत्थान पर अत्यधिक बल दिया। उस काल में हरिषेण कालिदास विशाखदत्त शूद्रक विष्णु शर्मा आदि अनेक विद्वान शामिल थे।

(IX) कला का विकास :-

गुप्त काल में भवन निर्माण कला शिल्प कला संगीत कला तथा चित्रकला आदि का भी बहुत विकास हुआ। इस काल के भवन निर्माण करना शैली पूर्णतया भारतीय थी। उस पर विदेशी कला का प्रभाव था। भवनों मे लकड़ी की अपेक्षा ईंटों तथा पत्थरों का अधिक प्रयोग किया जाता था।

(X) विज्ञान और प्रौद्योगिक का विकास :-

गुप्त काल में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का भी बहुत कम विकास हुआ था। सभी गुप्त शासकों ने वैज्ञानिकों को आश्रय प्रदान कर रखा था। उस काल में गणित ज्योतिष तथा चिकित्सा शास्त्र की उन्नति हुई थी। आर्यभट्ट उस समय का सबसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक था।

Pg. No.
Date / /

उसने दशमलव तथा पाई के सिद्धांत की खोज की। उसने अंकगणित बीजगणित तथा रेखागणित पर आर्यभट्टीय पुस्तक लिखी। उसकी दूसरी पुस्तक सूर्य सिद्धांत थी। जिसमे उसने चन्द्रगहन तथा सूर्यग्रहण के कारणों का पता लगाया।

(ग) भारतीय संस्कृति का विदेशों मे प्रचार :-

गुप्तकाल को स्वर्ण युग कहे जाने का एक अन्य महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि इस काल में भारतीय संस्कृति का प्रसार विदेशों में हुआ। इस समय वृहत्तर भारत की नींव डाली गई। भारत से अनेक प्रचारक एवं व्यापारी जावा सुमात्रा बाली बोर्नियो चीन तथा अन्य एशियाई देशों में गए। उन्होंने वहा के लोगों में भारतीय संस्कृति का प्रचार किया।

गुप्त काल भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग था। इस काल में भारत में राजनीतिक एकता स्थापित हुई। सभी गुप्त शासक प्रजा हितैषी थे। उन्होंने एक कुशल शासन प्रबन्ध की स्थापना की। देश में चारों ओर शांति व समृद्धि स्थापित की। कृषक तथा जनसाधरण जनता प्रसन्न थी। समाज के अधिकतर लोग शुद्ध जीवन व्यतीत करते थे। उस समय किसी प्रकार के अपराध नही होते थे। भारत में कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व उन्नति थी।

Pg. No.
Date / /

प्रश्न :-2 तुर्क कौन थे। मोहम्मद गोरी और महमूद गजनवी के आक्रमण के कारण आक्रमण का वर्णन और प्रभाव और राजपूतों की हार के कारण?

उत्तर :- तुर्कों के इतिहास को तुर्क जाति के इतिहास और उससे पूर्व के इतिहास के दो अध्यायों में देखा जा सकता है। सातवीं से बारहवीं सदी के बीच में मध्य एशिया से तुर्कों की कई शाखाएँ यहाँ आकर बसी। इससे पहले यहाँ से पश्चिम में आर्य पूर्व में कॉकेशियाइ जातियों का बसाव रहा था।

* तुर्क का प्रयास :-*

वर्तमान तुर्क पहले यूराल और अल्ताई पर्वतों के बीच बसे हुए थे। जलवायु के बिगड़ने तथा अन्य कारणों से लोग आसपास के क्षेत्रों में चले गए। लगभग एक हजार वर्ष पूर्व वे लोग एशिया माइनर में बसे।

* उस्मानी साम्राज्य :-*

मंगोलो का प्रभाव समाप्त होते ही आटोमन साम्राज्य की स्थापना हुई जिसका प्रथम सम्राट उसमान था। इस समय तुर्कों की सीमाओं में बहुत विस्तार हुआ। 1516 और 1517 में सीरिया और मिस्र जीत लिया गया। सुलतान सुलेमान के शासनकाल में एशिया माइनर कुछ अरब प्रदेश उत्तरी अफ्रीका पूर्वी भूमध्यसागरीय द्वीप बालकन काकेशस और क्रीमिया में तुर्कों का प्रभुत्व था।

(III) राजशाही का अन्त :-

1839 में व्यापक सुधार आंदोलन आरंभ हुआ जिससे सुलतान के अधिकार सिमंकित कर दिए गए इसी आशय का एक संविधान 1876 में पारित हुआ। किंतु एक वर्ष तक चलने के बाद स्थगित हो गया। तब वहाँ अनियन्त्रित राजतंत्र पुनः स्थापित हो गया। 1908 में युवक क्रांति हुई जिसके बाद 1876 में संविधान फिर से लागू हुआ। 1913 में सुलतान मेहमत शासन का अध्यक्ष बना।

(IV) युद्ध और उपरांत :-

प्रथम विश्वयुद्ध में तुर्की ने जर्मनी का साथ दिया। 1922 में मुस्तफा कमाल पशा ने देश का आधुनिकिकरण आरंभ किया। उन्होंने शिक्षा प्रशासन धर्म इत्यादि के क्षेत्रों में पारम्परिकता छोड़ी और तुर्की को आधुनिक राज्य के रूप में स्थापित किया।

तुर्की का मूल निवासी या निवासी ओटोमन साम्राज्य का मूल निवासी या निवासी। एक मुसलमान विशेष रूप से तुर्की के सुलतान का विषय। तुर्की भाषा बोलने वाले किसी भी समुदाय का सदस्य। देश का नाम तुर्की मध्यकालीन लैटिन तर्किया तर्किया से लिया गया है। जो मध्यकालीन ग्रीक Toobkia से लिया गया है यह पहली बार मध्य अंग्रेजी में दर्ज किया गया था।

महमूद गजनवी के भारत पर आक्रमण :-

महमूद गजनवी ने बचपन से ही भारत के विषय में सुन रखा था। वह सोने की चिड़िया है। अतः उसने गजनी का शासक बनते ही भारत की धन-सम्पति को लूटने की योजनाएँ बनाई।

(I) पहला आक्रमण :-

महमूद गजनवी ने अपना पहला आक्रमण 1000 ई० सीमांत नगरों तथा किलों पर किया। इस आक्रमण में उसने सिंधु नदी के पश्चिमी प्रदेशों के कुछ भागों नगरों तथा किलों में लूटमार की।

(II) दूसरा आक्रमण :- महमूद गजनवी ने दूसरा आक्रमण 1001 ई० में पंजाब के हिन्दुशाही शासक जयपाल पर किया। जयपाल एक महत्वाकांक्षी तथा शक्तिशाली शासक था। महमूद के पिता सुबुक्तगीन ने जयपाल को दो बार पराजित किया।

(III) तीसरा आक्रमण :- महमूद ने तीसरा आक्रमण सिन्ध नदी को पार करके भेरा राज्य पर किया। यह राज्य जेहलम नदी के तट पर था। यहाँ पर विजयराय नामक हिन्दू शासक राज्य करता था। भेरा का किला सैनिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था।

(IV) चौथा आक्रमण :- महमूद गजनवी ने चौथा आक्रमण मुल्तान पर किया। मुलतान इस समय अबुल फतेह दाऊद शासन करता था। वह मुसलमानों के कार्मथी समुदाय का अनुयायी था।

महमूद गजनवी के आक्रमणों के प्रभाव :-

कुछ इतिहासकारों का मत है कि महमूद गजनवी के आक्रमणों का भारत पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि उसका मुख्य उद्देश्य धन लूटना था।

(I) **भारतीय कला तथा संस्कृति को धक्का** :- महमूद गजनवी के आक्रमणों के परिणामस्वरूप भारतीय कला तथा संस्कृति को गहरा आघात लगा। महमूद ने जिस भी नगर पर आक्रमण किया उसे तथा उसके मंदिरों को नष्ट कर दिया।

(II) **धन-धन की हानि** :- महमूद के आक्रमणों से भारतीय शासकों की राजनीतिक दुर्बलता की पोल खुल गई उसने भारत पर 17 बार आक्रमण किए उसने यहाँ के अनेक शक्तिशाली शासकों को पराजित किया। भारत के शासकों में राजनीतिक एकता का अभाव था।

(III) **इस्लाम का प्रसार** :- महमूद के आक्रमणों का सबसे बड़ा प्रभाव यह पड़ा कि भारत में इस्लाम का प्रसार हुआ। उसने अपने आक्रमणों के समय हजारों की संख्या में भारतीयों को बलपूर्वक मुसलमान बनाया गया।

(IV) **भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना के द्वार खुलना** :- महमूद के आक्रमणों से भारत में इस्लामी राज्य स्थापित होने का रास्ता साफ हो गया। इन आक्रमणों से दूसरे आक्रमणकारियों का भी हौसला बढ़ा गया।

मोहम्मद गौरी के भारत पर आक्रमण :-

(I) **मुलतान तथा उच्च की विजय** :- मोहम्मद गौरी ने अपना पहला आक्रमण 1175-76 ई० में मुल्तान तथा उच्च पर किया। इन प्रदेशों पर आक्रमण करने के दो प्रमुख कारण थे। एक मुलतान की अनुकूल भौगोलिक स्थिति और दूसरे यहाँ पर कर्मातियों सम्प्रदाय का आधिपत्य था।

(II) **गुजरात पर आक्रमण** :- मुहम्मद गौर ने 1178 ई० में गुजरात पर आक्रमण किया। गुजरात अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए बहुत प्रसिद्ध था। यहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ थी। यहाँ पर अच्छी बंदरगाहें भी थी।

(III) **पंजाब की विजय** :- गुजरात में युद्ध के मोहम्मद गौरी की पराजय ने यह सिद्ध कर दिया कि उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त अर्थात् पंजाब को विजित किए बिना भारत के आन्तरिक प्रदेशों को जीता जा सकता है।

(IV) **कन्नौज की विजय** :- 1194 ई० में मुहम्मद गौरी ने कन्नौज के शासक जयचन्द राठौर पर आक्रमण कर दिया। पृथ्वीराज शासक ने जयचन्द की पुत्री संयोगिता के साथ बलात् विवाह कर लिया था।

(V) **महमूद गौरी की मृत्यु** :- 1205 ई० में खोखरों के शासक ने मुहम्मद गौरी को बुरी तरह से पराजित कर दिया। इससे उत्साहित होकर खोखरों ने गौरी के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

Pg. No. ______
Date __/__/

मुहम्मद गौरी के आक्रमण के प्रभाव :-

(I) **भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना :-** मुहम्मद गौरी के आक्रमणों के परिणामस्वरूप भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना हो गई। तुर्कों से पहले अरबों ने भारत पर आक्रमण किया। उन्होंने सिंध पर आक्रमण कर लिया था। उनके पश्चात गजनवी ने पंजाब पर अधिकार करने में सफलता प्राप्त करली कई प्रदेशों पर विजय प्राप्त कर ली।

(II) **भारतीय कला तथा साहित्य की हानि :-** मुहम्मद गौरी ने आक्रमणों के परिणामस्वरूप भारतीय कला और साहित्य के विकास को गहरा धक्का लगा। गौरी के सैनिकों ने अपने अभियानों से न केवल लूटमार की बल्कि अनेक नगरों तथा मंदिरों को भी नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

(III) **राजपूतों की शक्ति का अंत :-** मुहम्मद गौरी के आक्रमणों से राजपूतों की शक्ति को गहरा आघात पहुँचा। तराइन के दूसरे युद्ध में गौरी ने पृथ्वीराज चौहान और उसके 150 सामन्त शासकों के संघ को पराजित कर दिया।

(IV) **पंजाब में गजनी राज्य का अंत :-**

मुहम्मद गजनवी ने सबसे पहले पंजाब को गजनी साम्राज्य में सम्मिलित कर दिया। उसने मलिक खुसरो को पंजाब का सूबेदार नियुक्त किया। 1186 ई० में मुहम्मद गौरी ने धोखे से खुसरो का वध कर दिया।

Pg. No. ______
Date __/__/

प्रश्न :-3 चन्द्रगुप्त मौर्य अथवा मौर्यकालीन की प्रशासन व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर :- (I) **वंश :-**

चन्द्रगुप्त मौर्य के वंश के विषय में इतिहासकार एकमत नहीं है। यूनानी लेखों में चन्द्रगुप्त के नाम सैन्ड्रकोटस और चन्द्रसिरी मिलते हैं। परन्तु उसके वंश के विषय में कुछ नहीं कहा गया था। कुछ इतिहासकारों का मत है कि चन्द्रगुप्त नन्दवंश के शासक घनानन्द की पत्नी मुरा का पुत्र था। अपनी माता के नाम के कारण ही चन्द्रगुप्त मौर्य कहलाया।

(II) **जन्म तथा बाल्यकाल :-**

चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म 345 ई० पू० में मौरिया वंश के क्षत्रिय कुल में हुआ। उसके पिता क्षत्रिय वंश के शाक्य गणराज्य के प्रधान थे। महावंश टीका के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य के पिता मौरिया वंश के पिप्पलिवन गणराज्य पर शासन करते थे। चौथी सदी ई० पू० में उनका गणराज्य को मगध साम्राज्य में मिला लिया गया।

(III) **तक्षशिला में शिक्षा :-**

महावंश टीका के अनुसार जब चन्द्रगुप्त पशु चराने का कार्य करता था तो वह जंगल में अक्सर ग्वालों को इकट्ठा करके राजा और अधिकारियों का खेल खेलता था।

चाणक्य नाम का एक ब्राह्मण उन बच्चों के खेल को देख रहा था। वह चन्द्रगुप्त से इतना प्रभावित हुआ। कि उसने शिकारी से 1000 कार्षपण देकर खरीद लिया।

(IV) सिकंदर से भेंट :-

326 ई० पू० में सिकंदर ने भारत पर आक्रमण कर दिया। और अनेक क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया। यूनानी लेखक प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य तथा कौटिल्य ने तक्षशिला या उसके आस-पास के क्षेत्रों में सिकन्दर महान से मुलाकात की। चन्द्रगुप्त ने यूनानी सम्राट से कहा कि उसे नंद वंश के शासक घनानंद पर आक्रमण करना चाहिए।

उसने सिकंदर को हर सम्भव सहायता देने का भी वचन दिया, परंतु सिकंदर चन्द्रगुप्त के इस व्यवहार से क्रोधित हो गया। और उसने चन्द्रगुप्त और कौटिल्य को मौत के घाट उतारने की आज्ञा दे दी। हालांकि चन्द्रगुप्त और कौटिल्य वहाँ से जान बचाकर किसी तरह से भागने में सफल हो गए। जे० आर के मुखर्जी के अनुसार चन्द्रगुप्त को भारत को यूनानी दासता से मुक्त करवाने तथा देश के अधिकांश भागों को एक सूत्र के अधीन इकट्ठे करने का श्रेय प्राप्त है।

मौर्य प्रशासन की व्यवस्था इस प्रकार से है :-

मौर्यकाल की प्रशासन व्यवस्था :-

मौर्य साम्राज्य :-

मौर्य राजवंश या मौर्य साम्राज्य प्राचीन भारत का एक शक्तिशाली राजवंश था। मौर्य राजवंश ने 137 वर्ष भारत में राज्य किया। इसकी स्थापना का श्रेय चन्द्रगुप्त मौर्य और उसके मंत्री चाणक्य को दिया जाता है। यह साम्राज्य पूर्व में मगध राज्य में गंगा नदी के मैदानों से शुरू हुआ। इसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी।

* मौर्य के प्रशासन भाग :-

मौर्य प्रशासन की जानकारी हमें मेगस्थनीज के इंडिका और कौटिल्य के अर्थशास्त्र से मिलती है। मौर्य शासनव्यवस्था के रीढ की हड्डी चंद्रगुप्त मौर्य के शासन व्यवस्था थी। मौर्य प्रशासन को सुसंगठित ढंग से चलने के लिए कई भागों में बांटा गया था। जो इस प्रकार से है :-

(1) केंद्रीय प्रशासन :-

पूरे प्रशासन का कार्यकर्ता सम्राट स्वयं था जो स्वयं सारे राजकीय सत्ता का स्त्रोत था। उसके पास असीमित शक्तियाँ सेनानायक नियम बनाने वाले सर्वोच्च न्यायाधीश तथा मुख्य कार्य करने का अध्यक्ष होता था। वह अपना उत्तरदायित्व निभाने के लिए पूर्णतया समर्पित था। मौर्य साम्राज्य के विस्तार होने से राजा के शक्तियों में वृद्धि हुई।

(II) मंत्रिमंडल :-

कौटिल्य के अर्थशास्त्र से यह पता चलता है कि राजा ने कुछ बुद्धिमान व्यक्तियों को अपना सचिव नियुक्त किया था। यह सचिव मंत्री कहलाते थे। जो नीति का निर्धारण करने से पहले राजा के साथ विचार विमर्श करते थे।

(III) सैनिक प्रणाली :-

मौर्य शासन को चलाने के लिए 6 लाख पैदल सैनिक 30000 घुड़सवार सैनिक और 9000 हाथी तक 8000 रथ शामिल था। कहने का तात्पर्य यह है कि मौर्य के पास विशाल सेना थी।

(IV) प्रांतीय प्रशासन :-

कुशल प्रशासन चलाने के लिए मौर्य साम्राज्य विभिन्न भागों में बांटा हुआ था अशोक के शासनकाल में यह पांच भागों मे बांटा हुआ था। अशोक के शासनकाल में यह पांच भागों में बांटा हुआ था।

(I) उदिच्च उत्तरापथ जिसकी राजधानी तक्षशिला थी।
(II) अवंती जिसके राजधानी उज्जैनी थी।
(III) दक्षिणापथ जिसकी राजधानी स्वर्णगिरी थी।
(IV) कलिंग जिसकी राजधानी तोसाली थी।
(V) प्राच्य जिसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी।

(V) स्थानीय प्रशासन :-

मौर्य प्रशासन में प्रति को जिलों में बांटा दिया गया था शासन के इस इकाई को स्थानीय शासन के से जाना जाता था। इस शासन व्यवस्था के लिए स्थानीय लोग जिम्मेदार होते थे। उसके अधीन 800 ग्रामों का शासन होता था।

(VI) नगर प्रशासन :-

बताया गया है कि प्रत्येक कई नगरों में विभक्त होते थे। तथा प्रत्येक नगर के अलग-अलग न्यायाधीश होते थे। नगर का शासन 30 सदस्यों का एक मंडल चलता चलता था। यह मंडल 6 समितियों में विभक्त था। और प्रत्येक समिति के 5 सदस्य होते थे।

(VII) गुप्तचर विभाग :-

मौर्य प्रशासन को चलाने के लिए गुप्तचर विभाग की स्थापना की गई थी। गुप्तचर दो प्रकार के होते थे :-

(I) ऐसे गुप्तचर जो एक ही जगह स्थिर रहकर के काम करते थे।

(II) ऐसे गुप्त चर जो घूम-घूमकर के जन साधारण की गतिविधियों से राजा को अवगत कराते थे।

निष्कर्ष :- इन सब बातों से यह पता चलता है कि मौर्य साम्राज्य एक शक्तिशाली साम्राज्य था जिसकी शासनिक व्यवस्था सशक्त थी।

Pg. No. ____ Date __/__/__

प्रश्न ८4 हर्षवर्धन के शासन प्रबंध की व्याख्या कीजिए।

उत्तर ः हर्ष एक महान विजेता के साथ-साथ कुशल शासन प्रबन्धक भी था। उसने अपने शासनकाल में थोड़े बहुत परिवर्तनों के साथ गुप्तकालीन शासन व्यवस्था को ही जारी रखा। उसके शासन का स्वरूप सामन्तवादी था। हर्ष ने अपने ४२ वर्ष के शासनकाल में प्रशासन को जो सुदृढ़ता प्रदान की। वह उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया।

(I) राजा ः-

हर्ष के साम्राज्य का मुखिया राजा कहलाता था। हर्ष या राजा में समस्त शासन व्यवस्था और ही केन्द्रित थी। उसके शासन का स्वरूप राजतन्त्रात्मक था। राजा या सम्राट ही अपने प्रशासन का प्रमुख अधिकारी होता था। वह स्वंय कानून बनाता था। कानूनों को लागू करता था। कानूनों का उल्लंघन करने वाले को दण्ड देता था। वह अपने साम्राज्य का प्रथम कार्यपालिका न्यायपालिका विधानपालिका का अध्यक्ष तथा सर्वोच्च सेनापति होता था।

(II) मंत्रिपरिषद् ः-

कौटिल्य के अनुसार जिस प्रकार एक पहिया रथ नहीं चला सकता उसी प्रकार अकेला शासक प्रशासन नहीं कर सकता है। जिस प्रकार रथ को चलाने के लिए दूसरे पहिए की आवश्यकता होती है।

Pg. No. ____ Date __/__/__

उसी तरह प्रशासन चलाने के लिए राजा के लिए राजा को मंत्रियों की आवश्यकता पड़ती है। हर्ष भी मंत्रियों के महत्व को समझता है। वह किसी मंत्री को पदोन्नति कर सकता है किसी भी मंत्री को पद से हटा सकता था। हर्ष के मंत्रिमण्डल या मंत्रिपरिषद् में अनेकों मंत्री थे। जिसका वर्णन हर्ष के अभिलेखों तथा ह्वेनसांग के वृतांतों में मिलता है।

(I) प्रधानमंत्री ः-

हर्ष ने अपने मंत्रिपरिषद् में एक प्रधानमंत्री को नियुक्ति कर रखी थी। प्रधानमंत्री का स्थान अन्य मंत्रियों में सर्वोच्च अथवा राजा के बाद पहले नम्बर पर होता था। प्रधानमंत्री राजा को महत्वपूर्ण मामलों में सलाह देता था तथा सभी विभागों का निरीक्षण करता था। उनकी सूचना राजा को देता था। हर्ष का प्रधानमंत्री भण्डी था।

(II) महाबलाधिकृत ः-

महाबलाधिकृत सेना का मंत्री था। वैसे तो हर्ष स्वंय अपने साम्राज्य का सर्वोच्च सेनापति था। क्योंकि उसे प्रशासन के अन्य कार्य भी करने होते थे और उसके पास समय का अभाव था। इसलिए हर्ष ने अपने अधीन एक सेनापति को नियुक्ति कर रखी थी। सेनापति का प्रमुख कार्य सैनिकों की भर्ती करना। प्रशिक्षण देना वेतन देना आदि।

Pg. No. Date / /

(iii) महासंधिविग्रहाधिकृत :-

यह विदेशी मंत्री और युद्ध एवं शांति का मंत्री था। विदेशी मंत्री का मुख्य कार्य विदेशों में अपने देश का नेतृत्व करना विदेशों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाना अपने देश में विदेशी राजदूतों को स्वागत करना। उसके ठहरने का प्रबंध करना आदि था। राजा उसकी सलाह से किसी भी देश से युद्ध नहीं कर सकता।

(iv) कटुक :-

यह मंत्री हाथी सेना का अध्यक्ष होता था। इसका कार्य हाथी सेना की देखभाल करना। उनको प्रशिक्षण देना वेतन देना युद्ध में उपस्थित होना।

(v) वृहदश्वार :-

यह मंत्री घुड़सवार सेना का मंत्री होता था। इसके कार्य भी वैसे ही थे जैसे कटुक के थे।

(vi) अन्य मंत्री :-

हर्ष के अभिलेखों के अनुसार महाप्रतिहार विजयपाल दिविर दौस्साधनिक रत्नभंडागाराधिकरण महाप्रमात्र - महाप्रयतार च्याट - भट भोगपति अक्षपटलिक करणिक अग्रहारिक महत्तर मीमांसक आदि मंत्री भी हर्ष की मंत्रीपरिषद में थे। जो अपने - अपने विभागों के कार्यों को सुचारु रूप से चलाते है।

Pg. No. Date / /

(vii) स्थानीय शासन :-

हर्षवर्धन के प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव होती थी। प्रत्येक गाँव का मुखिया ग्रामिक कहलाता था। ग्रामिक ग्राम पंचायत जिसमें विशिष्ट लोग भाग लेते थे। की सहायता से गाँव का शासन चलाता था। उसका प्रमुख कार्य करना कृषकों की भलाई के लिए कार्य करना न्याय करना आदि था।

(viii) राजस्व प्रबंध :-

हर्ष के शासनकाल में राज्य की आय का प्रमुख स्त्रोत भूमिकर था। उस समय भूमिकर कुल उपज का छठा भाग लिया जाता था। राज्य की ओर से किसानों की भलाई पर अधिक ध्यान दिया।

(ix) प्रान्तीय तथा जिलों का प्रशासन :-

हर्ष ने अपने प्रशासन को सही ढंग से चलाने के लिए केन्द्रीय प्रशासन को आगे प्रांतों में बाँटा हुआ था। प्रान्त को भुक्ति और उसके मुखिया को उपारिक महाराज कहकर पुकारा।

(x) न्याय प्रबंध :-

हर्षवर्धन ने अपने साम्राज्य में शांति व्यवस्था स्थापित करने के लिए एक अच्छी न्याय व्यवस्था स्थापित कर रखी थी। उस समय राजा था हर्ष की अदालत सबसे बड़ी अदालत थी।

(XI) सैनिक प्रबंध :

हर्ष के समय एक अच्छा सैनिक संगठन प्रचलित था। तो समस्त सैनिक विभाग का मुखिया। स्वयं राजा ही होता था। फिर भी वह अपने अधीन एक प्रमुख सेनापति तथा अन्य सेना पतियों की नियुक्ति करता था। उसकी सेना में कुल चार विभाग थे। (1) पैदल (2) अश्वारोही (3) गजरोही (4) रथ। उसकी सेना में सैनिको की कुल संख्या लगभग 6 लाख थी। जिसमे से 1 लाख घोड़े के 60.000 हाथी शामिल थे।

(XII) राजधानी :

हर्ष जब गद्दी पर बैठा था। तो उस समय उसकी राजधानी थानेश्वर थी। कन्नौज की विजय के पश्चात् हर्ष का साम्राज्य विशाल होता था। हर्ष ने थानेश्वर की स्थान पर कन्नौज को अपनी राजधानी बना लिया। ह्वेनसांग के अनुसार कन्नौज नगर गंगा के पश्चिमी तट पर बसा हुआ नगर है जो चार मील लंबा है। नगर के चारो ओर सुरक्षित दीवार खाई तथा अनेक मजबूत बुर्ज बने हुए थे।